

जर्जर सड़क में फंसी भाजपा संगठन महामंत्री की कार मामले में मंत्री राजेश अग्रवाल का बयान

पवन साय ने जताई नाराजगी, कक्ष- जनता परेशान तो नेतागिरी का क्या फायदा

सरगुजा। नेशनल हाईवे की जर्जर सड़क को लेकर भाजपा संगठन महामंत्री पवन साय ने मंत्री और भाजपा नेताओं को जमकर फटकार लगाई। बताया जा रहा है कि जर्जर सड़क पर पवन साय की कार करीब दो घंटे तक फंसी रही, जिसके बाद उन्होंने सड़क की बदहाली को लेकर नाराजगी जताई।

एक्जिक्यूटिवब्रांच

मामले को लेकर पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री और अंबिकापुर विधायक राजेश अग्रवाल ने कहा कि पवन साय ने उन्हें भी सड़क की स्थिति को लेकर डांट लगाई। उन्होंने कहा कि क्षेत्र की जनता परेशान हो रही तो नेतागिरी का क्या फायदा ? इसके बाद नेशनल हाईवे के अधिकारियों को तत्काल सड़क की मरम्मत कराने



के निर्देश दिए गए। मंत्री के निर्देश के बाद जर्जर सड़क की मरम्मत का काम शुरू कर दिया गया है।

बता दें कि सड़क की स्थिति लंबे समय से लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई थी। अब मरम्मत कार्य शुरू होने से

स्थानीय लोगों और राहगीरों को राहत मिलने की उम्मीद है। भाजपा संगठन मंत्री की कार जर्जर सड़क में फंसेने और इसके बाद अधिकारियों को तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए जाने का मामला इलाके में चर्चा का विषय बना हुआ है।

रोटावायरस वैक्सीन की कमी खत्म, अस्पतालों में पहुंची खेप

पिथौरा। महासमुंद जिले में छोटे बच्चों को दी जाने वाली महत्वपूर्ण रोटोवायरस वैक्सीन की लंबे समय से चली आ रही कमी अब दूर हो गई है। करीब दो से तीन महीने के इंतजार के बाद वैक्सीन की खेप जिले के सरकारी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में पहुंच गई है। दरअसल, जिले के स्वास्थ्य विभाग में रोटोवायरस वैक्सीन की लंबे समय से कमी बनी हुई थी। सरकारी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में यह वैक्सीन उपलब्ध नहीं होने के कारण छोटे बच्चों के टीकाकरण को लेकर अभिभावकों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। पिथौरा स्वास्थ्य विभाग में साल भर में लगभग 3700 डोज रोटोवायरस ड्रॉप की खपत होती है। पूरे महासमुंद जिले में प्रति वर्ष करीब 15,000 डोज की जरूरत बताई जा रही है। यह वैक्सीन सरकारी आपूर्ति पर आधारित है। जिला स्वास्थ्य अधिकारी नागेश्वर राव ने स्पष्ट किया था कि हमारे यहां दो महीनों से स्टॉक की समस्या बनी हुई है। रोटोवायरस वैक्सीन शिशुओं को डेढ़ माह दो माह और साढ़े तीन माह की उम्र में तीन बार मुंह से ड्रॉप्स के रूप में दी जाती



वैक्सीन क्यों जरूरी है ?

गंभीर दस्त और उल्टी से बचाव, डिहाइड्रेशन रोकना, अस्पताल में भर्ती और खर्च कम करना, आसान खुराक (मुंह से ड्रॉप्स), सुरक्षित और प्रभावी सुरक्षा

है। यह वैक्सीन बच्चों को गंभीर दस्त डायरिया, उल्टी और पेट के खतरनाक संक्रमण से बचाती है। इससे शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी डिहाइड्रेशन रुकती है और अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत काफी कम हो जाती है। यह इंजेक्शन की जगह आसानी से पिलाई जाने वाली ड्रॉप्स हैं और शिशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करती है।

छत्तीसगढ़

प्रमुख समाचार

बिलासपुर में आईपीटीवी और ओटीटी के नाम पर ठगी

बिलासपुर। आईपीटीवी और ओटीटी सेवा के जरिए एक निजी कंपनी से 22 लाख रुपये की ठगी हुई है। शिकायत पर सिविल लाइन पुलिस ने केबल नेटवर्क कंपनी कैटविजन लिमिटेड के खिलाफ केस दर्ज किया है। कंपनी के अधिकारियों और प्रतिनिधियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता के तहत केस दर्ज किया गया है। गुरुवार को बिलासपुर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की है। सिविल लाइन थाना प्रभारी किशोर केवट ने बताया कि शिकायतकर्ता सीसीएन एंटरटेनमेंट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के अधिकृत डायरेक्टर अभिषेक अग्रवाल हैं। कंपनी का कार्यालय वेयरहाउस रोड, बिलासपुर में है और बिलासपुर और आसपास के क्षेत्रों में केबल नेटवर्क के माध्यम से चैनलों का प्रसारण किया जाता है। शिकायतकर्ता ने कैटविजन लिमिटेड से आईपीटीवी और ओटीटी सेवा उपलब्ध कराने के लिए संपर्क किया था। शिकायत के अनुसार कंपनी के प्रतिनिधि अंकुर , दिलीप और राजेश समेत अन्य अधिकारियों ने कंपनी कार्यालय पहुंचकर मुलाकात की।

महिला को मृत मानकर पुलिस ने जड़ा ताला, 2 घंटे बाद मिली जिंदा

बेमेतरा। जिले से पुलिस की संवेदनहीनता और बड़ी लापरवाही का हैरान करने वाला मामला सामने आया है। पुलिस ने फांसी लगाने की कोशिश करने वाली एक महिला को बिना किसी डॉकटरी जांच के मृत मान लिया। इतना ही नहीं, पुलिस ने बेसुध महिला को मृत समझकर कमरे में बंद किया, ताला जड़ा और परिजनों को अंदर जाने से रोक दिया। करीब दो तीन घंटे बाद जब पुलिस पंचनामे की औपचारिकता पूरी करने पहुंची, तो महिला जिंदा मिली। मिली जानकारी के अनुसार, यह पूरा मामला बेमेतरा सिटी कोतवाली क्षेत्र के एक महिला ने अज्ञात कारणों के चलते अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया था। घटना की भनक लगते ही आसपास के इलाके में हड़कंप मच गया और स्थानीय लोगों ने तुरंत इसकी सूचना डायल 112 और स्थानीय पुलिस को दी। परिजनों और चश्मदीदों के मुताबिक, सूचना मिलते ही मौलस टीम मौके पर पहुंची। लेकिन मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने संवेदनशीलता दिखाने के बजाय घोर लापरवाही बरती।

सरैहा गांव में टूटा पुराना बांध, मरम्मत नहीं होने से दरार हुई बड़ी

कबीरधाम। जिले के पंडरिया क्षेत्र लगातार हो रही बारिश के बीच पंडरिया विकासखण्ड क्षेत्र के ग्राम सरैहा में वर्षों पुराना बांध अचानक फूट गया। बताया जा रहा है कि बांध के मिट्टी वाले हिस्से में पहले छोटा सा छेद था, जो धीरे-धीरे बढ़ता गया ।आखिरकार पानी के तेज दबाव के कारण बांध का एक बड़ा हिस्सा बह गया। जिससे आसपास के किसानों की चिंता बढ़ गई है। ग्रामीणों के मुताबिक बांध में कुछ समय पहले से ही छोटा सा होल दिखाई दे रहा था इसकी जानकारी के बावजूद समय रहते आवश्यक मरम्मत नहीं होने के कारण स्थिति गंभीर होती चली गई लगातार बारिश के कारण बांध में पानी तेजी से बाहर निकलने लगा। बांध से पानी निकलने के कारण आसपास के खेतों में पानी पहुंचने और फसलों को नुकसान होने की आशंका जताई जा रही है ।किसानों का कहना है कि यदि पानी का बहाव इसी तरह जारी रहा तो सैकड़ों एकड़ में लगी फसल प्रभावित हो सकती है ।

कांकेर के रिहायशी इलाकों में बढ़ रहा भालू का खतरा

कांकेर। बीते कुछ दिनों से कांकेर के गोविंदपुर एरिया में भालुओं का आना-जाना बढ़ गया है। भालू लगातार रिहायशी इलाकों में पहुंचकर दहशत मचा रहे हैं। खाना और पानी की तलाश में भालू अक्सर लोगों के घरों में घुस रहे हैं। गुरुवार की रात एक बार फिर दो भालू गोविंदपुर इलाके में घुस आए। भालू सीधे घर के किचन तक पहुंचे और किचन में खाना खोजने लगे। इसी बीच स्लैब से बर्तन गिरने पर घर में सो रहे लोगों की नींद खुल गई। लोगों ने जब किचन में झांककर देखा तो पाया कि भालू घर के किचन में घुसा है। घर वाले घर के भीतर भालू को देखकर दशहत में आ गए। घर के लोगों ने तत्काल खुद को सुरक्षित तरीके से एक कमरे में बंद कर दिया। काफी देर तक भालू घर में घूमते रहे फिर वहां से चले गए। रामेश्वरम कॉलोनी, सरंगपाल के ग्रामीणों ने भालू के आने का वीडियो बना लिया। इलाके के लोगों का कहना है कि भालू रात करीब 2 बजे उनकी कॉलोनी में घुसे। गनीमत रही कि इस दौरान किसी इंसान से उनका सामना नहीं हुआ।

गले में सांप लटकाना पड़ा भारी, अस्पताल में भर्ती

जीपीएम। गौरेला के भदौरा गांव में शराब के नशे में एक ग्रामीण ने जहरीले सांप को पकड़ लिया। शराबी कभी सांप को अपने हाथों से उसके फन को पकड़ने की कोशिश करता तो कभी उसे गले में लपेटकर घूमता ।गांव वालों ने युवक को काफी समझाया कि सांप काफी जहरीला और फन वाला है, उसे छोड़ दे। लेकिन शराब के नशे में चूर ग्रामीण संतराम सांप को किसी भी कीमत पर छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। नतीजा ये हुआ कि सांप ने संतराम के हाथ पर काट लिया। सांप काटने के बाद लोगों ने उसे अस्पताल पहुंचाया लेकिन संतराम वहां से भाग निकला। सांप के काटते ही संतराम का हाथ सूजने लगा और वो दर्द से तड़पने लगा। लोगों ने उसे अस्पताल जाने की सलाह दी लेकिन उसने किसी की बात नहीं सुनी। जब उसकी तबीयत ज्यादा खराब होने लगी तब उसके भाई और भतीजे ने उसे अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टरों ने संतराम की हालत को देखते हुए उसे तत्काल अस्पताल में भर्ती कर लिया। पीड़ित संतराम की हालत में तेजी से सुधार हो रहा है।

लाल पानी को बोतल में लेकर कलक्ट्रेट पहुंचे आयरन हिल के नीचे बसे बाशिंदे

दंतेवाड़ा। कई दशकों से लाल पानी का दर्श झेल रहे आयरन हिल के नीचे बसे गाँवों के रहवासी लाल पानी का बॉटल लिए दंतेवाड़ा कलेक्टर से मिलने पहुंचे थे। कलेक्टर से मुलाकात नहीं होने से मायूस ग्रामीण वापस गांव लौट गए। बीजापुर जिले के गम्पुर, डोडी तुमनार, तामोडी, पुरंगेल समेत आधा दर्जन गाँवों के ग्रामीण बोतल में बचेली और किरंदुल के एनएमडीसी से निकलने वाली लाल पानी को लेकर दंतेवाड़ा कलेक्टोरेट पहुंचे थे। ग्रामीणों ने बताया कि बीते कई दशकों से एनएमडीसी के आयरन ओर डस्ट से निकलने वाली पानी से ग्रसित है। इस लाल पानी में खनन से निकलने वाली



आयरन ओर डस्ट बहकर आयरन हिल के नीचे बसे गाँवों में बहती है, जिसके कारण इन सभी गाँवों के ग्रामीणों के खेत पूरी तरह से बरबाद हो चुके है इन खेतों में ग्रामीण खेती भी नहीं कर पाते हैं। साथ ही ग्रामीणों के मवेशी भी इस आयरन ओर डस्ट से मिश्रित लाल

पानी की चपेट में आ जाते है। आयरन हिल के नीचे बसे गाँवों के ग्रामीणों के पास पीने की स्वच्छ पानी की भी व्यवस्था भी नहीं है। ग्रामीण नाले के किनारे जुगाड़ का कुआं बनाकर पूरे बारह माह इसी पानी को उपयोग करते हैं, जिससे संक्रमण बढ़ती है और इसका पूरा

असर ग्रामीणों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। कोलेट्रेट पहुंचे ग्रामीणों का आरोप की सरकार ने हमें विकास के नाम पर लाल पानी की सौगात दी है। जिससे हमारे खेत पूरी तरह से ब्यबाद हो चुके है। गांव में ना तो सड़क है ना ही विकास के नामों निशान है।

खुले नाले दे रहे खतरों को निमंत्रण, मनेंद्रगढ़ नपा के खिलाफ फूटा गुस्सा

हल ही में रायपुर में खुले नाले में डूबने से मासूम की हुई थी दर्दनाक मौत हो गई थी.

एमसीबी। शहर को साफ और स्वच्छ रखने के लिए मनेंद्रगढ़ नगर पालिका वार्डों में नाली निर्माण का काम करा रही है. निर्माण कार्य के दौरान बड़ी लापरवाही बरते जाने का आरोप शहर कांग्रेस अध्यक्ष ने लगाया है। कांग्रेस का आरोप है कि कई जगहों पर नाले के निर्माण के लिए बड़े बड़े गड्ढे खोदकर छोड़ दिए हैं, जिसमें बारिश का पानी भर गया है।

कांग्रेस का आरोप है कि कई जगहों पर तो नाला बना दिया गया है लेकिन उनको अबतक ढका नहीं नहीं गया। खुले नाले लगातार लोगों के लिए खतरे का सबब



बन रहे हैं। कांग्रेस पार्टी का कहना है कि नाली निर्माण होना जरूरी है लेकिन उसके लिए लोगों की सुरक्षा से समझौता नहीं किया जाना चाहिए। कांग्रेस की मांग है कि जहां जहां निर्माण कार्य के दौरान गड्ढा खोदा गया है, वहां-वहां बैरिकेडिंग किया जाना चाहिए। खुल नालों को भी जल्द से जल्द बंद किया जाना चाहिए ताकि कोई हादसा न हो। कांग्रेस ने खतरे वाली जगहों पर सुरक्षा संबंधित बोर्ड भी लगाने की मांग

की है। कांग्रेस का कहना है कि रात के अंधेरे में को पैदल या दोपहिया वाहन चालक इन गड्ढों या नालियों में गिर सकते हैं। कांग्रेस का कहना है कि जो भी संबंधित एजेंसी ये काम कर रही है उसको सुरक्षा के लिहाज से इन बातों का ध्यान रखना चाहिए। नगर पालिका और संबंधित अधिकारियों को कई बार इन समस्याओं की जानकारी दी गई, लेकिन अब तक सुरक्षा के ठोस इंतजाम नहीं किए गए। यदि समय

रहते खुले नालों को स्लैब से नहीं ढका गया पानी से भरे गड्ढों के आसपास बैरिकेडिंग नहीं की गई और चेतावनी संकेत नहीं लगाए गए तो भविष्य में कोई बड़ा हादसा होने से इनकार नहीं किया जा सकता- अशोक श्रीवास्तव, जिला अध्यक्ष, कांग्रेसहाल ही में रायपुर में खुले नाले में डूबने से मासूम बच्चे की दर्दनाक मौत हो गई थी। इस घटना के बाद प्रदेशभर में खुले नालों और निर्माण स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल उठे थे। इसके बावजूद मनेंद्रगढ़ में खुले नालों और पानी से भरे गड्ढों के आसपास पर्याप्त सुरक्षा इंतजाम नहीं दिखाई देना जिम्मेदार विभागों की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े करता है।

छत्तीसगढ़

रक्षाबंधन से पहले मिठाइयों की जांच तेज

खाद्य विभाग की टीम ने दो दिन में लिए सात सैंपल, एनालॉग पनीर पर भी नजर

खैरागढ़। रक्षाबंधन से पहले मिठाई और खाद्य पदार्थों में मिलावट रोकने खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग ने जांच अभियान तेज कर दिया है। ‘बने खाबो, बने रहिबो 2.0’ अभियान के तहत खैरागढ़ के ठेलकाडीह क्षेत्र में खाद्य प्रतिष्ठानों की जांच की गई। दो दिनों में विभाग अब तक 7 खाद्य पदार्थों के सैंपल लेकर जांच के लिए प्रयोगशाला भेज चुका है। कलेक्टर इंद्रजीत सिंह चंद्रवाल के निर्देशन में चल रहे अभियान के दूसरे दिन खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने ठेलकाडीह क्षेत्र में अलग-अलग खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया। टीम ने बालाजी स्वीट्स से खोवा, मोतीचूर लड्डू और मैसूर पाक के तीन विधिक नमूने लिए। इन नमूनों को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा।

इसी दौरान कान्हा बेकरी का भी निरीक्षण किया गया। यहां संचालक को साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखने, खाद्य लाइसेंस और पंजीयन को अपडेट रखने के निर्देश दिए गए। साथ ही एनालॉग पनीर की बिक्री या भंडारण नहीं करने की हिदायत दी गई।

जिला अभिहित अधिकारी खाद्य एवं औषधि प्रशासन सिद्धार्थ पांडेय ने बताया कि रक्षाबंधन को देखते हुए मिठाई बनाने वाले कारखानों, दुकानों, किराना दुकानों और त्योहार से जुड़ी खाद्य सामग्री बेचने वाले प्रतिष्ठानों की लगातार जांच की जा रही



है। अभियान 17 अगस्त से शुरू होकर एक सप्ताह तक चलेगा। उन्होंने कहा कि निरीक्षण के दौरान यदि किसी प्रतिष्ठान में बेहद खराब और अस्वच्छ परिस्थितियां पाई जाती हैं तो उसका लाइसेंस निलंबित करने के साथ प्रतिष्ठान बंद कराने की कार्रवाई भी की जा सकती है। समयऔर कैलेंडर

सिद्धार्थ पांडेय ने बताया कि छत्तीसगढ़ में एनालॉग पनीर की बिक्री प्रतिबंधित है इसलिए विभाग इसकी बिक्री और भंडारण पर विशेष नजर रख रहा है। उन्होंने लोगों से अपील की कि एनालॉग पनीर न खरीदें, न बनाएं और न बेचें। त्योहार के दौरान दूध से बने वास्तविक पनीर का ही इस्तेमाल करें। खाद्य विभाग का कहना है कि अभियान का मकसद त्योहार के दौरान लोगों तक सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री पहुंचाना और मिलावटी-अमानक खाद्य पदार्थों की बिक्री पर रोक लगाना है।

लोहिया पेपर मिल में मजदूर की मौत



परिजनों और क्रांति सेना का प्रदर्शन जारी, 50 लाख मुआवजा और नौकरी देने की मांग

बेमेतरा। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले के लोहिया पेपर मिल में गुरुवार देर शाम दर्दनाक हादसा हो गया। फैक्ट्री में काम के दौरान मजदूर की गड्ढे में गिरने से मौत हो गई। मृतक की पहचान मोहनदास बंजारे के रूप में हुई है। घटना से अन्य कर्मचारियों में हड़कंप मच गया। जानकारी मिलने पर मृतक के परिजन और क्रांति सेना मौके पर पहुंची। उन्होंने प्रबंधक के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। जानकारी के मुताबिक, मामला बेरला क्षेत्र के

नेवनारा स्थित लोहिया पेपर मिल का है। जहां काम के दौरान गड्ढे में गिरने से मजदूर मोहनदास की मौत हो गई। घटना के बाद परिजनों में प्रबंधन के खिलाफ भारी आक्रोश है। शुक्रवार को फैक्ट्री के बाहर उन्होंने प्रदर्शन शुरू कर दिया है। वहीं क्रांति सेना भी मौके पर पहुंच गई है। मौके पर तनाव की स्थिति बनी हुई है। सूचना के बाद तहसीलदार, नायब तहसीलदार और पुलिस की टीम मौके पर मौजूद है। बताया जा रहा है कि 11 लाख रुपये के मुआवजा देने के लिए प्रबंधन तैयार है। हालांकि परिजन अब तक अपनी मांगों पर अड़े हुए हैं और मुआवजे को लेकर सहमति नहीं बनी है।

नोटिस जारी किया है। साथ ही तत्काल प्रभाव से

विक्रय प्रतिबंध लगाते हुए पूरी इकाई को सील कर दिया गया है। निर्माण इकाई से तैयार किए गए कीटनाशी उत्पादों के नमूने भी लिए गए हैं, जिन्हें गुणवत्ता परीक्षण के लिए कीटनाशी गुण नियंत्रण प्रयोगशाला भेजा गया है। अब विभाग की आगे की कार्रवाई नोटिस के जवाब और प्रयोगशाला की जांच रिपोर्ट पर निर्भर करेगी। परीक्षण में उत्पादों की गुणवत्ता को लेकर कोई गड़बड़ी सामने आती है तो नियमानुसार अतिरिक्त कार्रवाई की जाएगी।

किसानों से भी अपील की गई है कि कीटनाशक खरीदने से पहले लेबल, बैच नंबर, निर्माण और अवसान तिथि तथा पंजीयन संबंधी जानकारी जरूर जांचें। किसी उत्पाद या प्रतिष्ठान को लेकर संदेह होने पर इसकी सूचना कृषि विभाग को देने की अपील की गई है।

संक्षिप्त समाचार

जनरेशन कंपनी के पांच कर्मों
उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित

रायपुर। छत्तीसगढ़ स्टेट पावर जनरेशन कंपनी



में अपने दायित्वों से बढ़कर उत्कृष्ट कार्य करने वाले पांच कर्मियों को प्रबंध निदेशक श्री एस.के. कटियार द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इन कर्मियों ने वित्तीय प्रबंधन, प्रशासनिक कार्यों, विद्युत उत्पादन की विश्वसनीयता बढ़ाने, कोयला आपूर्ति तथा मानव संसाधन प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है। सम्मानित होने वाले कर्मियों में कार्यपालन अभियंता श्री बलवंत पाटिल, सहायक अभियंता श्री सौरभ राय, कार्यालय सहायक श्रेणी-दो श्री पंकज शर्मा, अनुभाग अधिकारी श्री इमरान खान तथा डाटा एंट्री ऑपरेटर श्री हेमन्त कुमार साहू, शामिल हैं। श्री बलवंत पाटिल, कार्यपालन अभियंता ने सिकासार एवं गंगरेल जलविद्युत गृहों में स्थापित पुराने एवं अप्रचलित जनरेटर एक्साइटेशन सिस्टम के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री सौरभ राय, सहायक अभियंता ने जीपी- 111 खदान से कोयला आपूर्ति बाधित होने की स्थिति में एम्सईसीएल एवं रेलवे से सतत समन्वय स्थापित कर प्रतिदिन 3-4 कोयला रैक उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही समयपूर्व एलसी नवीनीकरण कर निर्बाध कोयला आपूर्ति सुनिश्चित की। उनके प्रयासों के फलस्वरूप एबीवीटीपीएस का वित्तीय वर्ष 2025-26 का वार्षिक कोयला भंडारण लक्ष्य फरवरी 2026 के अंत तक प्राप्त करने में सफलता मिली।

तय सीमा में नहीं हुआ राशन कार्ड में नाम
सुधार, सीएमओ पर 100 रुपए का जुर्माना

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के निर्देशनरूप आम जनता से जुड़ी सेवाओं को समय सीमा के भीतर पूरा करने हेतु लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत किन्यान्वन करना सुनिश्चित किया जा रहा है। रायपुर जिले के तित्वा नगर पालिका के मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री अमिताभ शर्मा पर लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत 100 रुपए का जुर्माना लगाया गया है। एक हितग्राही के राशन कार्ड में नाम सुधार का आवेदन प्राप्त हुआ था। लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत इसके लिए 30 दिन की समय सीमा निर्धारित है। परंतु निर्धारित समय सीमा के भीतर नाम सुधार का कार्य पूर्ण नहीं किया गया, जिसके कारण सीएमओ के विरुद्ध यह कार्रवाई की गई। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने कहा कि सभी विभाग लोक सेवा गारंटी अधिनियम का अनिवार्य रूप से पालन करें। जिस विभाग में निर्धारित समय सीमा के भीतर आम जनता को लाभ नहीं दिया जाएगा, संबंधित अधिकारी पर शासन के नियमानुसार जुर्माना लगाया जाएगा। कलेक्टर डॉ. सिंह ने समस्त विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया है कि आवेदनों का समय पर निराकरण सुनिश्चित किया जाए, ताकि आम नागरिकों को शासकीय सेवाओं का लाभ बिना विलंब के मिल सके।

सामान्य प्रशासन विभाग ने तृतीय श्रेणी पदों की शैक्षणिक योग्यता में किया संशोधन

रायपुर। सामान्य प्रशासन विभाग ने कर्मचारी चयन मंडल द्वारा भरे जाने वाले तृतीय श्रेणी पदों की शैक्षणिक योग्यता में संशोधन किया है। प्रशासकीय विभाग के भर्ती नियम में जो पद चतुर्थ श्रेणी के रूप में अधिसूचित हैं जो चतुर्थ श्रेणी के ही माने जाएंगे। सभी पदों के अभ्यर्थियों का छत्तीसगढ़ का मूल निवासी होना अनिवार्य होगा। उक्त अधिसूचना में समूह-2, तृतीय श्रेणी (स्नातकोत्तर एवं स्नातक स्तर) शीर्षक अंतर्गत उप समूह-01 के सरल क्रमांक 15 एवं उससे संबंधित प्रविष्टियों के पश्चा, निम्नलिखित नया सरल क्रमांक जोड़ा जाये, अर्थात – निरीक्षक (खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड) – किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक उत्तीर्ण। रास्व्य निरीक्षक – मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक उत्तीर्ण अथवा मान्यता प्राप्त मण्डल से हायर सेकेण्डरी (10+2) परीक्षा उत्तीर्णतथा सिविल इंजीनियरिंग (सर्वे) में डिप्लोमा। कनिष्ठ रोजगार अधिकारी – किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक उत्तीर्ण। समूह-2, तृतीय श्रेणी (स्नातकोत्तर एवं स्नातक स्तर) शीर्षक अंतर्गत उप समूह-02 के सरल क्रमांक 4 एवं उससे संबंधित प्रविष्टियों के पश्चा, निम्नलिखित नया सरल क्रमांक जोड़ा जाये, अर्थातः अनुदेशक (संस्कृति विभाग) –किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक उत्तीर्ण। अथवा अनिवार्य (कॉमन) परीक्षा आयोजित होगी। किसी मान्यता प्राप्त मण्डल से हायर सेकेण्डरी (10+2) उत्तीर्ण एवं छत्तीसगढ़ राज्य की मान्यता प्राप्त पॉलिटेक्निक संस्था से मॉर्डन। सभी का अनिवार्य (कॉमन) परीक्षा आयोजित होगी।

केसरा उद्हन सिंचाई योजना के निर्माण कार्य के लिए 14.61 करोड़ रुपए स्वीकृत

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन जल संसाधन विभाग द्वारा दुर्ग जिले के विकासखण्ड-पाटन की केसरा (केसरा) उद्हन सिंचाई योजना के निर्माण कार्य के लिए 14 करोड़ 61 लाख 33 हजार रुपए स्वीकृत किए गए हैं। सिंचाई योजना के निर्माण से करीब एक हजार हेक्टेयर क्षेत्र में स्थानीय किसानों के खेतों में सिंचाई की सुविधा होगी। योजना के कार्यों को पूर्ण करने मुख्य अभियंता महानदी गोदावरी कछार, जल संसाधन विभाग रायपुर को प्रशासकीय स्वीकृति दी गई है।

राजधानी/छत्तीसगढ़

शिक्षा विभाग की प्रेस वार्ता

चरणबद्ध तरीके से होगी 5000 शिक्षकों की भर्ती : गजेंद्र यादव

रायपुर। शिक्षा विभाग की प्रेस वार्ता में शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव और विभागीय सचिव डॉ. कमलप्रीत सिंह ने विभाग की ओर से किए जा रहे सुधारों और आगामी योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रदेश में शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए अभियान के तौर पर युक्तियुक्तकरण की प्रक्रिया पूरी की गई है।

विभाग के मुताबिक युक्तियुक्तकरण के जरिए 453 विभिन्न विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को पूरा किया गया है। अधिकारियों ने कहा कि स्कूलों के एकीकरण के जरिए उपलब्ध संसाधनों का बेहतर सदुपयोग किया गया है। इस प्रक्रिया में स्कूलों की संख्या कम करने के बजाय उनका समायोजन किया गया है।

प्रेस वार्ता में मंत्री गजेंद्र यादव ने बताया कि शिक्षक संवर्गों की पदोन्नति



की प्रक्रिया पारदर्शी तरीके से पूरी की गई है। वहीं, स्पेशल एगुकेटर के पदों पर भी भर्ती की गई है। विभाग ने बताया कि प्रदेश में 5000 शिक्षकों की भर्ती चरणबद्ध तरीके से की जा रही है। नियमित भर्तियां कर्मचारी चयन मंडल के माध्यम से की जाएंगी, जबकि संविदा पदों पर भर्ती के लिए कंप्यूटर आधारित परीक्षा आयोजित की जाएगी। भर्ती प्रक्रिया में मेरिट को आधार बनाया जाएगा। सरकारीकार्यकारी सेवाओं की जानकारी पाना

संविदा भर्तियों के लिए कंप्यूटर आधारित परीक्षा (सीबीटी) का प्रावधान किया गया है। विभाग का कहना है कि इससे भर्ती प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने में मदद मिलेगी।

शिक्षा विभाग ने शैक्षणिक सत्र 2026-27 को लेकर भी महत्वपूर्ण जानकारी दी। अब प्रदेश के सभी स्कूलों के संचालन के लिए एक समान शैक्षणिक समय-सारिणी तैयार की जाएगी। विभाग के अनुसार नए शिक्षण सत्र की शुरुआत 1 अप्रैल से होगी। इससे पहले प्रदेश में नया शैक्षणिक सत्र सामान्य तौर पर 15 जून से शुरू होता था। नई व्यवस्था का उद्देश्य शैक्षणिक गतिविधियों को अधिक व्यवस्थित करना और पूरे प्रदेश में स्कूल संचालन में एकरूपता लाना है।

भाजपा राज में फिर एक पेपर लीक : बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में बीएससी द्वितीय वर्ष का "एटोमालाजी" का पेपर लीक हो गया। इसके पहले पीडब्ल्यूडी की उप अभियंता परीक्षा में खुलेआम नकल हो रही थी। पीएससी की परीक्षा में पेपर जांचने वालों के नाम सोशल मीडिया में चल रहा था। पीएससी की एसआई भर्ती का प्री-परीक्षा के परिणाम में गड़बड़ी सामने आई। आरक्षक भर्ती, वनरक्षक भर्ती में गड़बड़ी की गयी। आरआई पदोन्नति परीक्षा में गड़बड़ी हुई। भाजपा के राज में कोई भी परीक्षा निष्पक्ष नहीं हो पा रही है। सरकार युवाओं का भविष्य बेच रही है।



प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा की ज़िद के कारण आम आदमी महंगाई की मार झेलने को मजबूर है। ई-20 पेट्रोल के कारण गाड़ियां खराब हो रही है। पेट्रोल में एथेनल मिलाने के कारण शक्कर की कीमत दुगुनी हो गयी है। पेट्रोल में एथेनल मिला रहे लेकिन रेट में कोई कमी

नहीं किया गया। हर तरह से आम आदमी को लूटा जा रहा, मिलावटी पेट्रोल का रेट महंगा, शक्कर महंगी, मिठाई एवं खाने के सामान सभी कुछ महंगा हो गया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि एयरपोर्ट के पास ब्लू वाटर में एक युवक डूब गया। अभी तक उनका पता नहीं लगाया जा सका है। ब्लू वाटर वाली जगह पहले मिट्टी खदान थी। राजधानी सहित पूरे प्रदेश में बंद पड़ी खदानों के गहरे गड्डे चातक रूप में हैं। नियम है कि खदान बंद होने पर गड्डों को भरा जाना चाहिए। हम सरकार से मांग करते है कि प्रदेश की खदानों का सर्वे किया जाए तथा बंद खदानों के गड्डों को भरने की कार्यवाही की जाए।

पुलिस कमिश्नर व कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति एवं एनकार्ड की समीक्षा बैठक हुई

- यातायात प्रबंधन सुदृढ़ करने के निर्देश
- कोटपा अधिनियम और नशा मुक्ति के तहत अभियान चलाने पर भी दिया गया जोर

रायपुर। कलेक्टरेट परिसर स्थित कलेक्टर सभाकक्ष में पुलिस कमिश्नर डॉ. संजीव शुक्ला एवं कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति एवं एनकार्ड की बैठक आयोजित की गई। बैठक में शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र में यातायात प्रबंधन और सड़क सुरक्षा को और सुदृढ़ बनाने हेतु विस्तृत चर्चा कर आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिए गए। बैठक में बताया गया कि शहर में विभिन्न स्थानों पर सड़क संरचना, रोड डिवाइडर, नाली-ड्रेनेज सिस्टम, विद्युत पोल, स्ट्रीट फर्नीचर एवं अन्य तकनीकी खामियों के कारण यातायात प्रवाह बाधित होकर जाम एवं दुर्घटना की स्थिति निर्मित होती है।

पुलिस कमिश्नर डॉ. संजीव शुक्ला ने कहा कि पुलिस प्रशासन एवं जिला प्रशासन को समन्वय बनाकर कार्य करना होगा। जिले में यातायात व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने हेतु



एक विशेष अभियान चलाया जाएगा। साथ ही स्कूल एवं कॉलेजों के पास कोटपा अधिनियम के तहत गुटखा-तंबाकू बेचने वाली दुकानों को सील करने के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने कहा कि इन निर्णयों से जिले में सड़क सुरक्षा और यातायात व्यवस्था को और प्रभावी बनाया जा सकेगा। उन्होंने समाज कल्याण विभाग को निर्देशित किया कि सामाजिक संगठनों एवं जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर नशा मुक्ति के खिलाफ विभिन्न बस्तियों में जागरूकता अभियान चलाया जाए और टीम प्रहरी के माध्यम से बाजारों में लगने वाले अवैध अतिक्रमण को हटया जाए। वीआईपी रोड पर नौ पार्किंग, धीरे चलें, गतिसीमा, रॉन्ग साइड न चलें, सावधान क्राॉसिंग जैसे संकेतक बोर्ड लगाए जाएंगे। श्रीराम मंदिर तिराहा से मंदिर तक बने अस्थायी डिवाइडर को स्थायी रूप दिया

जाएगा। तेलीबांधा चौक से किंरसवे होटल रोड तक डिवाइडर एवं तेलगानी नाका क्षेत्र में स्थित गैरेज के विस्थापन पर चर्चा की गई। सर्विस रोड का चौड़ीकरण, नए सर्विस रोड निर्माण एवं

अन्य निर्माण कार्यों पर चर्चा की गई। यातायात सुगमता के लिए निम्न 7 चौराहों पर सिग्नल लगाने की आवश्यकता बताई गई- द्रोणाचार्य स्कूल चौक – केनाल लिंकिंग रोड, राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र – कमल होटल के पास चौक – पुराना धमतरी रोड, बोरियाकला तिराहा के पास – अनुपमा गार्डन चौक – जी.ई. रोड, धुपड़ पेट्रोल पंप के पास – एम्स गेट पंथर 4 के सामने चौक – जी.ई. रोड – मंडी गेट तिराहा – पंडरी कपड़ा मार्केट के आगे – पंडरी थाना के सामने दुबे कॉलोनी तिराहा – व्यास तालाब तिराहा – रायपुर-बिलासपुर मार्ग, खमतराई थाना क्षेत्र शामिल है। बैठक में नगर निगम आयुक्त श्री संवित मिश्रा, रायपुर ग्रामीण एसपी श्रीमती श्वेता श्रीवास्तव सिन्हा, डीसीपी ट्रैफिक एवं प्रोटोकॉल डॉ. अर्चना झा, एसपी ट्रैफिक श्री सतीश ठाकुर, सहायित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

सरकारी कर्मचारियों की एनुअल एप्रेसल रिपोर्ट लिखने तय हुई समय

रायपुर। राज्य के शासकीय सेवकों की वार्षिक कार्य निष्पादन मूल्यांकन प्रतिवेदन लिखे जाने हेतु समय-सीमा निर्धारित किया गया है। इस संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से तामान विभाग प्रमुखों, सभागायुक्तों, कलेक्टरों को पत्र जारी किया गया है। पत्र में वर्ष 2025-26 के अवधि के लिए निर्धारित समयवधि में वार्षिक कार्य निष्पादन मूल्यांकन प्रतिवेदन नहीं लिखा जा सका है, उन शासकीय सेवकों का प्रतिवेदन नए प्रपत्र में ऑनलाईन/ऑफलाईन मोड में निर्धारित समय सीमा में लिखा जाना सुनिश्चित करने कहा गया है। इसके लिए मौजूदा वर्ष के लिए स्व: मूल्यांकन के लिए 15 मई, 2026 की बजाए 31 अगस्त, 2026, प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा मूल्यांकन 15 जून, 2026 की बजाए 30 सितंबर, 2026 और स्वीकार करने वाला अधिकारी द्वारा मूल्यांकन की अवधि 16 अगस्त 2026 की बजाए 30 नवंबर 2026 तय की गई है।

आधुनिक शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता : टंक राम

■ नई दिल्ली में केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी से की महत्वपूर्ण मुलाकात

रायपुर। बलौदाबाजार-भाटापारा जिले में शिक्षा के स्तर को नई ऊंचाई देने के लिए राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री टंक राम वर्मा के प्रयास अब सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। जिले में केंद्रीय विद्यालय की स्थापना को लेकर मंत्री श्री वर्मा ने नई दिल्ली में केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी से मुलाकात कर इस विषय पर विस्तार से चर्चा की।

मुलाकात के दौरान उच्च शिक्षा मंत्री श्री वर्मा ने बलौदाबाजार-भाटापारा जिले में केंद्रीय विद्यालय की महता और स्थानीय विद्यार्थियों के हित से जुड़े विभिन्न पहलुओं से केंद्रीय मंत्री को अवगत कराया। उन्होंने प्रक्रिया को गति देते हुए जल्द से जल्द स्वीकृति प्रदान करने का आग्रह किया।

इस पर सकारात्मक रुख अपनाते हुए केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने आश्चस्त किया कि इस विषय पर जल्द ही आवश्यक निर्णय लिया जाएगा। केंद्रीय मंत्री के इस आश्वासन से जिले में केंद्रीय विद्यालय की स्थापना को उम्मीदें और मजबूत हो गई हैं।

मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय विद्यालय की स्थापना को



लेकर केंद्र सरकार के स्तर पर बेहद सकारात्मक चर्चा हुई है। केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी जी द्वारा जल्द निर्णय लेने का आश्वासन मिलना पूरे जिले के लिए सुखद और उत्साहजनक है।

बलौदाबाजार-भाटापारा जिले में केंद्रीय विद्यालय की स्थापना लंबे समय से क्षेत्रवासियों की प्रमुख मांग रही है। वर्तमान में बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को बड़े शहरों या अन्य जिलों का रुख करना पड़ता है। जिले में विद्यालय खुलने से स्थानीय विद्यार्थियों को अपने ही क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर का शैक्षणिक माहौल उपलब्ध हो सकेगा।

राज्य सरकार द्वारा विद्यालय के संचालन के लिए शुरुआती दौर में अस्थायी भवन की व्यवस्था के साथ-साथ भविष्य में स्थायी भवन निर्माण हेतु भूमि चिह्नित एवं आरक्षित करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। उच्च शिक्षा मंत्री टंक राम वर्मा की पहल पर जिले में शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर और आधुनिक सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। केंद्रीय विद्यालय की स्थापना की दिशा में आगे बढ़ी यह पहल जिले के समग्र शैक्षणिक विकास को एक नई गति प्रदान करेगी।

बिहान से कम लागत में राखी निर्माण को मिला नया आयाम

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन 'बिहान' से जुड़कर ग्रामीण महिलाएं अपनी पारंपरिक दक्षता और स्थानीय संसाधनों को आजीविका के अवसरों में बदल रही हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएं कृषि एवं अन्य गतिविधियों के साथ-साथ मौसम और त्योहारों के अनुरूप सीजनल व्यवसाय अपनाकर आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। अम्बिकापुर विकासखंड के ग्राम पंचायत किशुन नगर की जय मां दुर्गा स्वयं सहायता समूह की महिलाएं इसी बदलाव की प्रेरक मिसाल हैं। रक्षाबंधन पर्व को देखते हुए समूह की 12 महिलाएं इन दिनों घरेलू एवं स्थानीय संसाधनों से आकर्षक राखियां तैयार कर रही हैं। कम लागत में तैयार इन राखियों को स्थानीय बाजार में स्टॉल लगाकर और घर से विक्रय किया जा रहा है।

चमोली टनल हदसा : घायलों को मिलेंगे 50-50 हजार

मृतकों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपये देगी साय सरकार

रायपुर। छत्तीसगढ़ के सीएम विष्णुदेव साय ने उत्तराखंड के चमोली में निर्माणाधीन सुरंग में हादसे के दौरान प्रदेश के मृतकों के परिजनों और घायलों को सहायता राशि देने की घोषणा की है। इस घटना में चार मजदूरों के निधन गहरा शोक जताते हुए मुख्यमंत्री ने मृतक श्रमिकों के परिजनों को पांच-पांच लाख और घायल रमिकों को 50-50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता राशि देने के निर्देश जारी किये हैं।

इस हादसे में कोंडागांव जिले के ग्राम धनसुली के दो, मदनार के एक और दहीकोंगा के एक श्रमिक की मौत हुई थी। वहीं इसी जिले के दो मजदूर घायल हुए हैं। दिवंगत श्रमिकों के



मुख्यमंत्री साय ने कहा कि राज्य सरकार दुःख की इस घड़ी में शोकाकुल परिवारों के साथ खड़ी है और उन्हें हरसंभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्माओं की शान्ति एवं शोकाकुल परिजनों को इस असीम दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है। उन्होंने हादसे

में घायल दोनों श्रमिकों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की भी कामना की है।

बता दें कि उत्तराखंड के चमोली में 13 अगस्त को हुए दर्दनाक टनल हादसे में 10 मजदूरों की मौत थी। इनमें चार मजदूर छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले के थे। दादसे को लेकर 117 घंटे का रेस्क्यू अभियान चला था।

एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के जवान 117 घंटे तक बचाव और राहत कार्य में लगे रहे। अंदर की मशीनों को भी बाहर निकाला गया था। अभियान में कुल 10 लोगों के शव बरामद किये गये थे, जिसमें चार मजदूर छत्तीसगढ़ के थे। वहीं बड़ी संख्या में श्रमिक घायल हुए थे।

कृषि विश्वविद्यालय पेपर लीक पर एनएसयूआई का प्रदर्शन

■ जिम्मेदारों का मांगा इस्तीफा

रायपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में पेपर लीक मामले तूल पकड़ता जा रहा है। भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) से जुड़े कार्यकर्ताओं ने विश्वविद्यालय प्रशासनिक भवन के सामने शुक्रवार को प्रदर्शन करते हुए जिम्मेदारों से इस्तीफे की मांग की। एनएसयूआई प्रदेश अध्यक्ष नीरज पांडे के नेतृत्व में बड़ी संख्या में जुटे कार्यकर्ताओं ने नकली नोट और डाकपर रखकर नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया। छात्र संगठन ने कृषि विश्वविद्यालय प्रबंधन को इस संबंध में कार्रवाई के लिए 72 घंटों का अल्टीमेटम दिया है।

बता दें कि बीएससी द्वितीय वर्ष के Pest Management in Crops and Stored Grains-I (AENT 221) विषय के प्रश्नपत्र लीक होने की शिकायत कवर्धा प्राप्त होने के बाद इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय (द्वययुद्ध)



प्रशासन ने परीक्षा को रद्द कर दिया था। विश्वविद्यालय प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि रद्द की गई परीक्षा दोबारा आयोजित की जाएगी। इसके लिए नई तारीख अलग से जारी की जाएगी।

मामले में कुलसचिव डॉ. कपिल देव दीपक ने बताया था कवर्धा से मिली शिकायत के आधार पर यह कार्रवाई (पेपर रद्द करने) की गई है। पेपर रायपुर में तैयार होता है, और यहां से 28 कॉलेजों में भेजा जाता है। परीक्षा रद्द करने की जांच के लिए पांच सदस्यीय टीम गठित की गई है। एक सप्ताह में रिपोर्ट मांगी गई है, ताकि दोषी पर कड़ी कार्रवाई हो सके।

‘दिमागी नक्सलियों’ को चाहिए कमजोर लोकतंत्र

विनोद अनुपम

ख्वाजा अहमद अब्बास की फिल्म ‘नक्सलवादी’, जो नक्सलवादी चारु मजूमदार की बायोपिक के रूप में बनाई गई थी, से लेकर हाल ही में बनी ‘लाल सलाम’ और ‘टैंगो चाली’ तक सैकड़ों ऐसी फिल्में बनीं, जिनमें हथियारबंद नक्सलियों के पक्ष में नैरेटिव बनाने की कोशिश की गई थी। एक ओर पुलिस खलनायक के रूप में दिखती, दूसरी तरफ राजसत्ता आमजन के दुश्मन के रूप में और नक्सलवादी हालात के मारे एकमात्र उद्धारक के तौर पर। विभिन्न भाषाओं में हजारों नाटक आपको नक्सलियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते दिखते रहे होंगे। ये लेखक, फिल्मकार, विचारक और रंगकर्मी जंगलों में हथियार के साथ तो नहीं दिखते, नक्सलियों के उन दस्ते में भी नहीं दिखते जो अस्पताल और ट्रेन उड़ाने जाते रहे हैं। ये हमारे–आपके पड़ोस में दिखते हैं, ये विश्वविद्यालयों में दिखते हैं, ये हवाई जहाज पर दिखते हैं, इनके बच्चे विदेशों में पढ़ते हैं, ये विदेशों में व्याख्यान देने जाते हैं। राजसत्ता पर ‘अधिकार’ करने की लड़ाई नक्सली हथियारों के साथ लड़ते हैं, ये सभ्य समाज के बीच उनके पक्ष में नैरेटिव बनाकर उनके मनोबल को बनाए रखने का काम करते हैं। ये समाज को बदलने के झूठे सब्जबाग, जिसके बारे में इन्हें पता है कि ये कभी साकार नहीं हो सकता, दिखाकर युवाओं को सीधे संघर्ष में उतरने की प्रेरित करते हैं। प्रधानमंत्री ने सही कहा, “माओवाद ने लाखों युवाओं के भविष्य को तबाह कर दिया। इस नक्सलवाद ने 4 दशकों तक हिंदुस्तान के बहुत बड़े हिस्से को, बहुत बड़ी आबादी को बंदूक की नोक पर दबोच करके रखा था, संविधान की ध्घ्नजियां उड़ा दी थीं और देश के सामान्य नागरिकों की रक्षा में सुरक्षा बल के 3500 से ज्यादा जवान शहीद हो गए।” सीधी लड़ाई तो बंदूकों से लड़ी जा सकती है, ऐसी लड़ाई, जिसे दुश्मन हमारी बगल में बैठ कर हमारे ही संसाधनों से लड़ रहा हो, वहां मुकाबला मुश्किल हो जाता है। तब और भी, जब आपको उस नैरेटिव की लड़ाई के लिए तैयार होना हो, जो देश में 80 वर्षों से अपने पंजे और दांत हर दिन हर पल मजबूत करने में लगी है। जाहिर है, प्रधानमंत्री को स्वाधीनता दिवस के भाषण में दिमागी नक्सली को आइसोलेट करने की बात कहनी पड़ती है। गौरतलब है कि इनकी ये गतिविधियां बीते 14 वर्षों से नहीं, हर सरकारों के समय जारी रही हैं, चाहे इंदिरा गांधी हों या राजीव गांधी या फिर आज नरेन्द्र मोदी। इसीलिए यदि किसी राजनीतिक पार्टी, जिसे लोकतंत्र और भारत की संप्रभुता में विश्वास है, को यदि यह भ्रम है कि ये ‘दिमागी नक्सली’ उनके पक्ष में हैं तो यह भ्रम साफ कर लेना चाहिए। वास्तव में ये मौके की तलाश में रहते हैं। दिमागी नक्सली यही चाहते हैं, जनता कष्ट में रहेगी, शासन व्यवस्था अव्यवस्थित रहेगी तो देश को अपने अनुसार चलाना आसान रहेगा। वास्तव में दिमागी नक्सल एक सुविधाभोगी प्रजाति है, उसे ए.सी. चाहिए, बंगला चाहिए, लंबी गाड़ी चाहिए, विदेश यात्रा चाहिए। इस सबके लिए वे कुछ भी दांव पर लगाने को तैयार रहते हैं, अपने कामरेडों को भी, जिन्होंने जंगलों में जान गंवा दी, संविधान को भी, स्वतंत्रता को भी, देश को भी। ये हर उस स्थिति के साथ होते हैं, जो देश के विरुद्ध होती है, चाहे वह आतंकवाद हो, कस्मीर हो, सियाचिन हो। ऐसा तब आसान हो जाता है, जब देश में अस्थिरता, अराजकता और कमजोर शासन व्यवस्था रहती है। दुनिया के कई देशों की भी इच्छा भारत को इसी अस्थिरता में देखने की होती है। प्रधानमंत्री ने गलत नहीं कहा, हथियारी नक्सल तो गए लेकिन दिमागी नक्सल, ये दिमागी नक्सल मौके की तलाश में हैं। हिसा, अराजकता के रास्ते खोज रहे हैं। समाज को गलत राह पर घसीटने के लिए भांति–भांति के दांव लगा रहे हैं।

पुराण दिग्दर्शन

विश्व विद्या-निरुपणाध्यायः (दशम अध्याय)

(गतांक से आगे...)

अब जिस गति विशेष से यह सब कुछ होता है उसे पुराण-ग्रन्थों में अयन कहते है जो दक्षिण और उत्तर भेद से दो प्रकार का है। यथा-

अनयस्योत्तरस्यादौ मकरं याति भास्करः। ततः कुम्भं च मीनञ्च राशे राशयन्तरं द्विज।। त्रिष्वेतेष्वथ युक्तेषु ततो वैषुवतों गतिम्। प्रयाति सविता कुर्वन्नहोरात्रं ततः समम्।। ततो रात्रिः क्षयं याति वर्धतेऽनुदिनं दिनम्। तलश्च मिथुनस्यान्ते परां काष्ठमुपागतः॥ राशि कर्कटकं प्राप्य कुस्ते दक्षिणायनम्॥ (विष्णुपुराण 3 । 8 । 30-33)

अर्थात्- हे द्विज! उत्तरायण में पहिले सूर्य मकर राशि पर गमन करता है, फिर कुम्भ और उसके अनन्तर मीन राशि पर जाता है। इस तीन राशियों को क्रमशः भोग कर सूर्य अहोरात्र समान करता हुआ वैषुवती गति का अवलम्बन करता है, अर्थात् विषुवत्

रेखा में गमन करता है। तदनन्तर रात घटने लगती है और दिन बढ़ने लगता है सूर्य मेष वृष को अतिक्रमण करके मिथुन राशि के अन्त में उत्तरायण की प्सीमा पर उपस्थित होता है। अन्त में कर्क राशि को प्राप्त होते ही दक्षिणायन हो जाता है।

उपर्युक्त श्लोकों का मनन करने से सूर्य की त्रिविध गति के कारण दिन-रात, गर्मी-सर्दी और ऋतु परिवर्तन सम्बन्धी सब बातों का पूरा 2 ज्ञान प्राप्त हो जाता है। गागर में सागर इसी का नाम है।

तडित् (बिजली)

विभिन्न धातुओं के मिश्रण से या आपस की राड़ से अथवा वायव्य संघर्षण से विद्युत् शक्ति उत्पन्न हो जाती है। आजकल इससे कई प्रकार के कार्य लिये जाते हैं यह बात प्रायः सभी जानते हैं। परीक्षा करके देखा गया है कि विद्युत् में दो प्रकार की शक्ति है, जिसे अंग्रेजी में पाजिटिव और नेगेटिव कहते हैं।

क्रमशः ...

कतिलाल मांडेत

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने पद संभालने के करीब सात माह बाद अपनी नई राष्ट्रीय टीम की घोषणा कर संगठन में व्यापक बदलाव का संकेत दिया है। नई टीम में अनुभव और युवा ऊर्जा के बीच संतुलन बनाने के साथ सामाजिक, क्षेत्रीय और राजनीतिक समीकरणों को साधने की कोशिश साफ दिखाई देती है। 65 नेताओं को अलग-अलग संगठनात्मक जिम्मेदारियां दी गई हैं। इनमें 13 राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, आठ राष्ट्रीय महासचिव और 16 राष्ट्रीय सचिव शामिल हैं। इसके अलावा विभिन्न मोर्चों और संगठनात्मक प्रकोष्ठों में भी नई नियुक्तियां की गई हैं।

नवीन की टीम को केवल संगठनात्मक फ्रेमवर्क के रूप में नहीं देखा जा रहा है, बल्कि इसे आगामी विधानसभा चुनावों और 2029 के लोकसभा चुनाव की तैयारियों से जोड़कर देखा जा रहा है। खासतौर पर 2027 में होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को भाजपा ने अपनी रणनीति के केंद्र में रखा है। यही वजह है कि उत्तर प्रदेश से जुड़े कई अनुभवी और प्रभावशाली नेताओं को राष्ट्रीय संगठन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां दी गई हैं।

नई टीम की सबसे चर्चित नियुक्तियों में पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी का राष्ट्रीय महासचिव बनना है। 2024 के लोकसभा चुनाव में अमेठी से हार के बाद स्मृति ईरानी की यह संगठनात्मक वापसी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। भाजपा ने उन्हें ऐसे समय में राष्ट्रीय संगठन की जिम्मेदारी दी है, जब उत्तर प्रदेश में 2027 का विधानसभा चुनाव पार्टी के लिए बड़ी राजनीतिक परीक्षा बनने जा रहा है। स्मृति ईरानी का आक्रामक राजनीतिक शैली, संगठनात्मक अनुभव और महिला मतदाताओं के बीच संवाद क्षमता को पार्टी चुनावी रणनीति में इस्तेमाल करना चाहती है।

उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के पीछीए यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक समीकरण के जवाब में भाजपा ने अपनी सामाजिक पहुंच बढ़ाने की कोशिश की है। अमरपाल मौर्य को पिछड़ा वर्ग मोर्चा की जिम्मेदारी और कुंकुर् बासित अली को अल्पसंख्यक मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया जाना इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। रेखा वर्मा और प्रो. तारिक मंसूर को भी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी देकर पार्टी ने सामाजिक प्रतिनिधित्व का संदेश दिया है। स्मृति ईरानी के साथ उत्तर प्रदेश के हरीश

ज्ञान/मीमांसा

भाजपा की नई टीम में दमखम



द्विवेदी को भी राष्ट्रीय महासचिव बनाया गया है। हरीश द्विवेदी का संगठन और चुनावी प्रबंधन का अनुभव पार्टी के लिए उपयोगी माना जाता है। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव के दौरान संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने, कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने और विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संवाद बढ़ाने की चुनौती होगी। ऐसे में राष्ट्रीय संगठन में उत्तर प्रदेश के नेताओं की मौजूदगी पार्टी की रणनीति को राज्य की जमीनी राजनीति से जोड़ने में मदद कर सकती है।

नई टीम में राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है। वसुंधरा राजे का राजनीतिक अनुभव और राजस्थान में उनका प्रभाव भाजपा के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। राष्ट्रीय संगठन में उन्हें महत्वपूर्ण स्थान देकर पार्टी ने एक ओर उनके अनुभव का सम्मान किया है, वहीं दूसरी ओर राजस्थान के सामाजिक और राजनीतिक समीकरणों को साधने का प्रयास भी किया है। वसुंधरा राजे की भूमिका केवल राजस्थान तक सीमित नहीं मानी जा रही, बल्कि पार्टी के व्यापक संगठनात्मक संतुलन में भी उनका उपयोग हो सकता है।

राजस्थान की राजनीति में वसुंधरा राजे का लंबा अनुभव उन्हें भाजपा के वरिष्ठ नेताओं में अलग स्थान देता है। राजपूत, जाट और अन्य पारंपरिक भाजपा समर्थक सामाजिक समूहों के बीच उनकी राजनीतिक स्वीकार्यता को पार्टी के लिए उपयोगी माना जाता है। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में उनकी मौजूदगी भाजपा के पारंपरिक मतदाता आधार को एकजुट रखने और वरिष्ठ नेतृत्व तथा संगठन के बीच समन्वय कायम करने में भूमिका निभा सकती है। आगामी चुनावों के दौरान पार्टी को जहां नए सामाजिक समूहों तक पहुंच बनानी है, वहीं अपने परंपरागत समर्थकों को भी साथ बनाए रखना है। वसुंधरा राजे की

नियुक्ति इसी दोहरी रणनीति का हिस्सा दिखाई देती है।

नई टीम में राम माधव की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में वापसी भी खास चर्चा में है। संगठन और वैचारिक मामलों में लंबे अनुभव वाले राम माधव की वापसी से भाजपा ने अनुभवी नेतृत्व को फिर से राष्ट्रीय संगठन में सक्रिय किया है। इसी तरह त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री बिप्लब कुमार देब, राजस्थान के सतीश पूनिया, गजेंद्र पटेल, हरीश द्विवेदी और संजय भाटिया को राष्ट्रीय महासचिव की जिम्मेदारी दी गई है। इनमें कई नेताओं के पास चुनावी प्रबंधन और संगठन विस्तार का अनुभव है।

बीएल संतोष राष्ट्रीय संगठन महामंत्री के रूप में अपनी जिम्मेदारी सभालते रहेंगे। शिवप्रकाश और अन्य संगठनात्मक पदाधिकारियों को भी महत्वपूर्ण दायित्व देकर पार्टी ने संगठन की निरंतरता बनाए रखी है। इसका अर्थ यह है कि भाजपा ने पूरी तरह पुराने ढांचे को बदलने के बजाय अनुभवी संगठनकर्ताओं के साथ नए चेहरों को जोड़कर आगे बढ़ने का रास्ता चुना है।

नई टीम में महिला प्रतिनिधित्व को भी महत्व दिया गया है। 13 राष्ट्रीय उपाध्यक्षों में छह महिलाएं हैं और कुल मिलाकर 12 महिला पदाधिकारियों को राष्ट्रीय संगठन में जिम्मेदारी मिली है। स्मृति ईरानी का राष्ट्रीय महासचिव बनना इस लिहाज से विशेष महत्व रखता है। भाजपा लंबे समय से महिला मतदाताओं को अपने राजनीतिक आधार का महत्वपूर्ण हिस्सा मानती रही है। ऐसे में राष्ट्रीय संगठन में महिलाओं को प्रमुख जिम्मेदारियां देकर पार्टी महिला नेतृत्व को मजबूत करने का संदेश दे रही है।

सामाजिक प्रतिनिधित्व के स्तर पर भी नई टीम में विविधता दिखाई देती है। टीम में वंचित समुदायों, आदिवासी और अनुसूचित जाति वर्ग के नेताओं के साथ अल्पसंख्यक समुदायों को भी प्रतिनिधित्व दिया गया है। एक सिख, ईसाई, मुस्लिम, जैन और पारसी समुदाय से जुड़े नेताओं को जगह देकर भाजपा ने अपने संगठन को सामाजिक रूप से अधिक व्यापक स्वरूप देने का प्रयास किया है। पूर्वोत्तर राज्यों को भी संगठन में प्रतिनिधित्व मिला है। बिप्लब कुमार देब को राष्ट्रीय महासचिव, फांगनोन कोन्याक और गुगांका देन बर्मन को राष्ट्रीय सचिव की जिम्मेदारी मिलना पूर्वोत्तर पर पार्टी के बढ़ते फोकस को दर्शाता है।

गुजरात से युवा मौफा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में डॉ. हेमांग जोशी की नियुक्ति भी संगठन में

युवा नेतृत्व को बढ़ावा देने का संकेत है। कांग्रेस से भाजपा में आए रोहन गुप्ता और जगदीश पटेल को राष्ट्रीय सचिव की जिम्मेदारी दी गई है। पंजाब में तरुण चुच को राष्ट्रीय कार्यालय प्रभारी और मणप्रीत सिंह बादल को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाकर पार्टी ने राज्य के राजनीतिक समीकरणों को साधने की कोशिश की है। आम आदमी पार्टी से भाजपा में आए राज्यसभा सांसद संदीप पाठक को भी राष्ट्रीय सचिव की जिम्मेदारी दी गई है।

संगठन के संचार तंत्र में किया गया बदलाव भी महत्वपूर्ण है। लंबे समय से भाजपा के सोशल मीडिया और आईटी तंत्र से जुड़े अमित मालवीय की जगह प्रो. दीपक म्हरके को सोशल मीडिया प्रभारी बनाया गया है। यह बदलाव ऐसे समय हुआ है, जब चुनावी राजनीति में डिजिटल माध्यमों की भूमिका लगातार बढ़ रही है। सोशल मीडिया अब केवल प्रचार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि मतदाताओं तक सीधे संवाद, लाभार्थियों से संपर्क और विपक्ष के प्रचार का जवाब देने का महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। ऐसे में पार्टी सोशल मीडिया रणनीति को नए तरीके से आगे बढ़ाने की तैयारी में दिखाई देती है।

मीडिया की जिम्मेदारी अनिल बलुनी के पास बकरारर रखी गई है। वहीं केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल को कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। इससे यह संकेत भी मिलता है कि पार्टी ने कुछ महत्वपूर्ण पदों पर निरंतरता को प्राथमिकता दी है।

नई टीम की औसत उम्र करीब 50 वर्ष बताई गई है। इसमें 40 वर्ष से कम उम्र के छह नेता हैं, जबकि 40 से 49 वर्ष आयु वर्ग के 15, 50 से 59 वर्ष के 21 और 60 वर्ष से अधिक उम्र के 23 नेता शामिल हैं। इससे साफ है कि भाजपा ने पूरी तरह युवा चेहरों पर निर्भर होने के बजाय अनुभव और नई पीढ़ी के बीच संतुलन साधा है।

कुल मिलाकर नितिन नवीन की नई टीम भाजपा के संगठनात्मक पुनर्गठन से कहीं आगे की तस्वीर पेश करती है। इसमें अनुभव, युवा नेतृत्व, महिला प्रतिनिधित्व, सामाजिक विविधता और क्षेत्रीय संतुलन को एक साथ साधने की कोशिश की गई है। स्मृति ईरानी की वापसी और वसुंधरा राजे को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलना इस टीम के सबसे बड़े राजनीतिक संकेत हैं। अब देखना होगा कि संगठन में किए गए ये बदलाव चुनावी मैदान में कितनी प्रभावी रणनीति में बदलते हैं और 2027 के विधानसभा चुनावों में भाजपा अपने नए संगठनात्मक ढांचे से कितना राजनीतिक लाभ हासिल कर पाती है।

सत्य तो हमारे भीतर ही छिपा है, अपने मन पर विजय पाना ही सार्थक सूत्र

पॉल ब्रंटन

मैंने दुनिया के तमाम मुल्कों की यात्रा की। महानगरों की भीड़ देखी, प्राचीन मंदिरों की निस्तब्धता में समय बिताया, रेगिस्तानों के सत्राटे से लेकर पर्वतों की ऊंचाइयों तक का अनुभव किया। विद्वानों से प्रश्न किए, साधुओं के चरणों में बैठा और रहस्यवादियों की शिक्षाओं को सुना। इन सभी के पीछे सवाल सिर्फ एक ही था- सत्य कहाँ है?

मनुष्य की सबसे पुरानी और सबसे गहरी आकांक्षा सत्य की खोज ही रही है। वह जन्म से मृत्यु तक किसी न किसी रूप में उसकी खोज करता रहता है। कोई उसे धर्म में खोजता है, कोई विज्ञान में, तो कोई प्रेम में, कोई सत्ता में और कोई ज्ञान में। मैं भी उसी खोज का एक यात्री था। लंबे समय तक मुझे लगता रहा कि सत्य कहीं

बाहर छिपा है। मुझे लगता था कि कोई खास जगह होगी, कोई आश्रम, जहां पहुंचकर यह रहस्य खुल जाएगा। इसी विश्वास ने मुझे दूर-दूर तक भटकया। लेकिन, धीरे-धीरे एक विचित्र तथ्य मेरे सामने

प्रकट होने लगा। जिन व्यक्तियों में मैंने वास्तविक शांति देखी, वे किसी बाहरी उपलब्धि के कारण शांत नहीं थे। उनकी आंखों में जो स्थिरता थी, वह संसार से प्राप्त नहीं हुई थी। वे किसी वस्तु के मालिक होने के कारण संतुष्ट नहीं थे, बल्कि वे स्वयं के स्वामी होने के कारण संतुष्ट थे। अधिकांश लोग मानते हैं कि यदि धर्म में खोजा है, कोई विज्ञान में, तो कोई प्रेम में, कोई सत्ता में और कोई ज्ञान में। मैं भी उसी खोज का एक यात्री था। लंबे

जिसकी हमें तलाश है।

बाहरी संसार का स्वभाव परिवर्तनशील



सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

सत्य का अन्तरांतर

खोज रहा था, वह तो उसके पास ही थी।

जब मैंने भारत के महान संतों से यह प्रश्न पूछा कि सत्य कहाँ है, तो उनके उत्तर अलग-अलग थे। लेकिन संकेत एक ही दिशा में था। भीतर की यात्रा सदैव मांगती है। जो व्यक्ति इस साहसपूर्ण यात्रा को स्वीकार कर लेता है, वह धीरे-धीरे एक अद्भुत खोज करता है। वह पाता है कि उसके विचार बदलते रहते हैं, पर वह स्वयं विचार नहीं है। उसका शरीर समय के साथ बदलता है, पर उसकी चेतना का मूल केंद्र बना रहता है और उसी केंद्र में एक ऐसी शांति विद्यमान है, जो परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती। धन, सम्मान, ज्ञान और परिस्थितियां बदलती रहती हैं, पर भीतर की चेतना में स्थित शांति स्थिर रहती है। जीवन का सार उपलब्धियों को पाने में नहीं, बल्कि स्वयं की समझने और मन पर विजय पाने में है।

आज का इतिहास

- 1320 नसीरुद्दीन खुसरू को गाजी मलिक ने हराया
- 1639 ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) की स्थापना की।
- 1818 भारत के प्रथम गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स का निधन।
- 1848 अमेरिका ने न्यू मैक्सिको पर कब्ज़ा किया।
- 1849 इतिहास का पहला हवाई हमला ऑस्ट्रिया ने इटली के शहर वेनिस में चालक रहित गुब्बारों से किया।
- 1851 ऑस्ट्रेलिया में सोने की खानों के इलाके की खोज हुई।
- 1894 नेटाल भारतीय कांग्रेस की स्थापना महात्मा गाँधी द्वारा 22 अगस्त को की गई थी।
- 1910 जापान ने पांच साल तक कोरिया का संरक्षण करने के बाद उस पर कब्ज़ा किया।
- 1914 ब्रिटिश और जर्मन सैनिकों के बीच बेल्जियम में पहली मुठभेड़ हुई।
- 1919 प्रसिद्ध कवि एवं नाटककार गिरिजाकुमार माथुर का जन्म।
- 1921 राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई।
- 1955 प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता और राजनीतिज्ञ चिरंजीवी का जन्म।
- 1978 केन्या के पहले राष्ट्रपति जोमो केन्याता का 83 साल की उम्र में निधन हुआ।
- 1979 राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने लोकसभा भंग की।
- 2002 काठमांडू में सार्क विदेश मंत्रियों का सम्मेलन सम्पन्न, नेपाल में हवाई दुर्घटना में 16 व्यक्ति मारे गये।
- 2007 अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की मरम्मत के लिए दो सप्ताह के मिशन पर गया अंतरिक्ष यान एण्डेवर फ़्लोरिडा में कैंनेडी स्पेस सेंटर पर सुरक्षित उतरा।
- 2007 मिस्र के पुरातत्वविदों ने पश्चिम रेगिस्तान के सिवा क्षेत्र में लगभग 20 लाख साल पुराने मानव पद-चिह्नों का पता लगाया।
- 2008 मध्य प्रदेश सरकार ने बनवावासीयों के लिए साधारण वन अपराध संहिता और मुक्तका का वसूली खत्म करने का निर्णय लिया।
- 2012 सीरिया के गृहयुद्ध में 47 लोग मारे गए।
- 2014 ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कन्नड़ भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार, आलोचक और शिक्षाविद यू. आर. अनंतमूर्ति का निधन।
- 2017 मणिपुर के पूर्व छठवें मुख्यमंत्री रत्नगं कीशिंग का निधन।
- 2018 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राजनेता तथा प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ गुरुदास कामत का निधन।
- 2018 सही सरनोबत 25 मीटर पिस्टल निशानेबाजी में स्वर्णम सफलता हासिल कर एशियाई खेलों की निशानेबाजी स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।

सर्जियो गोर के बयान से तिलमिलाये पाकिस्तान ने ट्रंप प्रशासन पर उतारी भड़़ास

नौरज कुमार दुबे

सर्जियो गोर के एक बयान ने पाकिस्तान को ऐसा झटका दिया कि इस्लामाबाद ट्रंप प्रशासन पर बुरी तरह भड़क उठा। अमेरिका के भारत में राजदूत और दक्षिण व मध्य एशिया के विशेष दूत सर्जियो गोर ने श्रीनगर पहुंचकर जम्मू-कश्मीर को भारत का महत्वपूर्ण हिस्सा क्या बताया, पाकिस्तान की वर्षों पुरानी कूटनीतिक पटकथा ही हिल गई। प्रतिक्रिया इतनी तीखी थी कि पाकिस्तान ने अमेरिकी चार्जें डी अफेयर्स नताली बेकर को विदेश मंत्रालय तलब कर बाकायदा स्टूनिंग डिमाशं थमा दिया और गोर के बयान को गैर-जिम्मेदाराना करार दे डाला। सवाल यह है कि आखिर गोर के शब्दों में ऐसा क्या था जिसने पाकिस्तान को सीधे अमेरिका से भिड़ने के लिए मजबूर कर दिया ?

दरअसल, श्रीनगर दौरे पर पहुंचे गोर ने साफ कहा, यह भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और मैं यहां पहली बार आया हूं। उन्होंने जम्मू-कश्मीर की खूबसूरती की तारीफ की, मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से मुलाकात की और कहा कि अमेरिका जम्मू-कश्मीर के लिए अपनी ट्रैवल एडवाइजरी की समीक्षा कर सकता है। गोर ने यह भी माना कि केंद्र सरकार और जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने क्षेत्र को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इसके बाद उनका डल झील में शिकारा की सवारी करना केवल पर्यटन कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक मजबूत प्रतीकालक संदेश भी बन

गया। अमेरिका का शीर्ष राजनयिक जम्मू-कश्मीर की जमीन पर खुले तौर पर भारत की संप्रभुता के अनुरूप भाषा बोल रहा था और क्षेत्र को संभावित रूप से अमेरिकी पर्यटकों के लिए सुरक्षित गंतव्य के रूप में देख रहा था।

यही बात पाकिस्तान को सबसे ज्यादा चुभी। इस्लामाबाद ने तुरंत पुराना राग छेड़ते हुए जम्मू-कश्मीर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त विवादित क्षेत्र बताया और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों तथा कश्मीरी लोगों की आकांक्षाओं का हवाला दिया। पाकिस्तान का आरोप था कि गोर की टिप्पणी अमेरिका की पुरानी स्थिति के विपरीत है। यानी जिस वाशिंगटन से पाकिस्तान दशकों से कश्मीर पर अंतरराष्ट्रीय दखल, मध्यस्थता और भारत पर दबाव की उम्मीद लगाए बैठा था, उसी अमेरिकी प्रशासन के एक प्रमुख प्रतिनिधि ने श्रीनगर में जाकर ऐसी भाषा बोल दी जिसने इस्लामाबाद की कूटनीतिक बेचनी बढ़ा दी।

इस घटनाक्रम का सामरिक महत्व बेहद बड़ा है। भारत लगातार यह स्पष्ट करता रहा है कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और इससे जुड़ा कोई भी लंबित मुद्दा भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय है। भारत ने तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को हमेशा खारिज किया है। इसके उलट पाकिस्तान का पूरा प्रयास कश्मीर को लगातार अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जीवित विवाद के रूप में पेश करने का रहा है। गोर का इंपॉर्टेंट पार्ट ऑफ इंडिया वाला



बयान, यदि वाशिंगटन की व्यापक नीति में किसी बदलाव का संकेत साबित होता है, तो यह पाकिस्तान को इसी रणनीति पर सीधा प्रहार होगा।

हालांकि यहां कूटनीतिक सावधानी भी जरूरी है। पूर्व विदेश सचिव कंवेल सिम्बल ने इस बयान को महत्वपूर्ण बताया है, लेकिन यह संभावना भी जाई कि गोर अपने औपचारिक निर्देशों से आगे निकल गए हों और पाकिस्तान को शांत करने के लिए अमेरिका बाद में अपना पुराना रुख दोहरा सकता है। यही कारण है कि भारत के लिए केवल एक बयान को अंतिम अमेरिकी नीति परिवर्तन मान लेना जल्दबाजी होगी। फिर भी, यह टिप्पणी उस पृष्ठभूमि में बेहद मायने रखती है जिसमें अमेरिका के पिछले रुख में अक्सर कश्मीरी लोगों की इच्छाओं जैसी भाषा दिखाई देती रही है और स्वयं 'डोनाल्ड ट्रंप कई मौकों पर कश्मीर पर मध्यस्थता की पेशकश कर चुके हैं'।

लेकिन इस पूरे विवाद का एक दूसरा और शायद ज्यादा दिलचस्प रणनीतिक पहलू पाकिस्तान की गोर से सीधी भिड़ंत है। गोर दक्षिण और मध्य एशिया के विशेष दूत भी हैं और उनके दायरे में पाकिस्तान भी आता है। ऐसे में पाकिस्तान ने जिस तीखे तरीके से उन्हें निशाने पर लिया है, उससे गोर के लिए पाकिस्तान संबंधी कूटनीतिक भूमिका और मुश्किल हो सकती है। सिम्बल ने भी इसी ओर इशारा करते हुए कहा कि पाकिस्तान ने गोर पर जिस तरह हमला किया है, उससे वह नाराज हो सकते हैं और यह भारत के लिए अच्छी बात है।

इसका सीधा लाभ यह हो सकता है कि अमेरिका-पाकिस्तान समीकरण में पैदा होने वाली खटास वाशिंगटन को दक्षिण एशिया में अपनी प्राथमिकताओं पर नए सिरे से विचार करने के लिए प्रेरित करे। पाकिस्तान लंबे समय से अमेरिकी मध्यस्थता की उम्मीद पर कश्मीर नैरेटिव को अंतरराष्ट्रीय बनाने की कोशिश करता रहा है। लेकिन अगर ट्रंप प्रशासन के प्रभावशाली चेहरे के साथ ही उसका टकराव गहराता है, तो इस्लामाबाद की वाशिंगटन लॉबिंग कमजोर पड़ सकती है और भारत के लिए अमेरिका के साथ रणनीतिक

संवाद को मजबूत करने की गुंजाइश बढ़ सकती है।

हम आपको यह भी बता दें कि दक्षिण एशिया विशेषज्ञ माइकल कुगेलमैन ने भी गोर की टिप्पणी को भारत-अमेरिका संबंधों को सुधारने की दिशा में मददगार बताया है। उन्होंने कहा है कि दिल्ली आने के बाद गोर भारत के साथ रिश्तों को सुधारने के लक्ष्य पर काम कर रहे हैं और यह बयान उस प्रयास को निश्चित रूप से मजबूती दे सकता है। हालांकि उन्होंने यह चेतावनी भी दी कि यदि यह वास्तव में अमेरिकी नीति का संकेत है, तो यह वर्षों पुराने अमेरिकी रुख से अलग होगा और पाकिस्तान के साथ दोबारा मजबूत हो रहे संबंधों को प्रभावित कर सकता है।

साथ ही गोर के दौरे का आर्थिक और सुरक्षा संबंधी संदेश भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। अमेरिका फिलहाल जम्मू-कश्मीर के लिए लेवल-4: डू नॉट ट्रैवल एडवाइजरी बनाए हुए है, जो अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के लिए बड़ी बाधा रही है। पिछले वर्ष पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद सुरक्षा चिंताएं और बढ़ी थीं। अब गोर का यह कहना कि अमेरिकी प्रशासन ट्रैवल चेतावनी को कम करने की संभावना पर विचार करेगा, जम्मू-कश्मीर के लिए बड़ा अवसर बन सकता है। यदि एडवाइजरी में ढील मिलती है तो इसका संदेश केवल पर्यटकों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह क्षेत्र की सुरक्षा स्थिति पर अमेरिकी भरोसे का अंतरराष्ट्रीय संकेत होगा।

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने भी गोर के साथ पर्यटन, बागवानी और नई अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों में जम्मू-कश्मीर और अमेरिका के बीच संबंधों को व्यापक और गहरा करने पर चर्चा की। ऐसे समय में जब पर्यटन से हजारों परिवारों की रोजी-रोटी जुड़ी है और पीढ़ीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती भी अमेरिकी ट्रैवल एडवाइजरी की समीक्षा की मांग कर चुकी हैं, किसी संभावित बदलाव का आर्थिक असर व्यापक हो सकता है।

कुल मिलाकर, श्रीनगर में सर्जियो गोर का दौरा पाकिस्तान के लिए सिर्फ एक कूटनीतिक झटका नहीं, बल्कि उसके वर्षों पुराने कश्मीर नैरेटिव पर सीधा प्रहार है। पाकिस्तान ने अमेरिकी अधिकारी को तलब कर अपनी नाराजगी तो दर्ज करा दी, लेकिन इस आक्रामक प्रतिक्रिया ने यह भी साफ कर दिया कि गोर के शब्द इस्लामाबाद को कितनी गहराई तक चुभे हैं। अब नजर इस बात पर रहेगी कि क्या ट्रंप प्रशासन गोर की टिप्पणी को आगे की नीति में बदलता है या पाकिस्तान को शांत करने के लिए पुराने अमेरिकी रुख की ओर लौटता है। लेकिन फिलहाल भारत तय है कि श्रीनगर से निकला वह संदेश इस्लाम के लिए रणनीतिक, कूटनीतिक और आर्थिक, तीनों मोर्चों पर संभावित लाभ का दरवाजा खोलता है, जबकि पाकिस्तान के सामने सवाल यह खड़ा कर देता है कि अमेरिका से भिड़कर उसने अपनी ही कूटनीतिक जमीन तो और कमजोर नहीं कर ली है।

किसान आंदोलन : पंजाबियों ने क्या पाया और क्या खोया

इकवाल सिंह चन्नी

पंजाब के किसान आंदोलन को समझने के लिए 2021 और 2024 के दोनों चरणों को एक साथ देखना जरूरी है। जून 2020 में केंद्र सरकार द्वारा 3 कृषि कानूनों के पारित होने के बाद अगस्त में धरनों और सितम्बर में रेल रोको के आह्वान के साथ शुरू हुआ किसान आंदोलन नवम्बर 2020 में किसान संगठनों द्वारा 'दिल्ली चलो' कार्यक्रम के साथ आधिकारिक तौर पर शुरू हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य तीनों कृषि कानूनों को वापस करवाना था। वहीं 2024 में केंद्रीय मुद्दा सभी मुख्य फसलों के लिए देशभर में एम.एस.पी. की कानूनी गारंटी और कई अन्य मांगें बन गईं। यही अंतर आज के गतिरोध को समझने की कुंजी है। 2020 में केंद्र द्वारा 3 कृषि कानून लाए जाने के बाद पंजाब और हरियाणा से शुरू हुआ आंदोलन नवम्बर 2020 में दिल्ली की सीमाओं तक पहुंच गया। सिंधु, टिकरी और गाजीपुर समेत कई मोर्चों पर किसान लंबे समय तक डटे रहे। 2021 में केंद्र और किसान नेताओं के बीच कई दौर की बैठकें हुईं लेकिन कोई समझौता नहीं हुआ। 26 जनवरी, 2021 को लाल किले की घटना ने आंदोलन को बड़ा झटका दिया लेकिन किसान मोर्चा टूटा नहीं। आखिरकार 19 नवम्बर, 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ये तीनों कानून वापस लेने की घोषणा की और 29 नवम्बर को संसद ने इन कृषि कानूनों को खत्म करने का कानून पारित कर दिया। यहां एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि 2021 में किसान नेताओं की एकता और एक स्पष्ट मुख्य मांग, कृषि कानूनों की वापसी थी, जिसने सरकार पर बड़ा दबाव बनाया। हालांकि कानून वापस होने के बाद एम.एस.पी. की कानूनी गारंटी सहित अन्य मांगों अधूरी रह गईं। अधूरी रह गई मांगों को मनवाने के

लिए फरवरी 2024 में एस.के.एम. (गैर-राजनीतिक) से जुड़ी जल्येबंदियों ने डह्लेवाल के नेतृत्व में फिर से 'दिल्ली चलो' का आह्वान किया। इस बार एम.एस.पी. को कानूनी हक बनाना, किसानों की कर्ज माफी, स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें और अन्य कृषि मुद्दे केंद्र में आ गए।हरियाणा सीमा पर किसानों को रोकने के लिए बैरिकेड्स, आंसू गैस और अन्य सुरक्षा इंतजाम किए गए। दिल्ली पहुंचने की बजाय मुख्य मोर्चे शंभू और खनौरी पर टिक गए। इस तरह 'दिल्ली चलो' मोर्चे धीरे-धीरे शंभू-खनौरी मोर्चे में तबदील हो गया। 26 नवम्बर, 2024 को जगजीत सिंह डह्लेवाल ने खनौरी में आमरण अनशन शुरू किया। इससे आंदोलन को नई ताकत मिली। केंद्र के साथ कई बैठकें हुईं लेकिन एम.एस.पी. की कानूनी गारंटी पर कोई अंतिम सहमति नहीं बनी, बल्कि किसान नेताओं ने एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप शुरू कर दिए। 2021 के आंदोलन की कामयाबी के बावजूद एक बड़ी कमजोरी किसान नेताओं के बीच आपसी फूट के रूप में सामने आ गई। 2021 के बाद किसान नेताओं का एक हिस्सा चुनावी राजनीति में आ गया और संयुक्त समाज मोर्चा बनाया गया। बलबीर सिंह राजेवाल इस प्रक्रिया का मुख्य चेहरा थे। दूसरी तरफ जगजीत सिंह डह्लेवाल थे, जो चुनाव लड़ने के खिलाफ थे, जिसके कारण पहले वाली किसान एकता को झटका लगा। राजेवाल ने बार-बार यह सवाल उठाया कि किसान आंदोलन को एकजुट रणनीति और साझा नेतृत्व की जरूरत है। दूसरी तरफ डह्लेवाल की ओर से भी अन्य किसान नेताओं की रणनीति और आंदोलन के प्रति भूमिका पर सवाल उठाए गए। इस तरह आज किसान आंदोलन की लड़ाई केवल केंद्र सरकार के साथ नहीं, बल्कि नेताओं के बीच रणनीति और भरोसे की लड़ाई भी बन गई है।

अहंकारी टकरावों के कारण पंगु होती संसद ?

प्रभु चावला

लोकतंत्र केवल तब खत्म नहीं होता जब चुनाव बंद कर दिए जाएं, सरकारें गिरा दी जाएं या संविधान निलंबित कर दिया जाए। लोकतंत्र तब भी कमजोर पड़ सकता है जब उसे चलाने के लिए बनाए गए संवैधानिक संस्थान अपने निर्धारित कार्य करना बंद कर दें। जब तर्कों की जगह दावे, बातचीत की जगह टकराव और विचार-विमर्श की जगह बहुमत का अंकगणित ले लेता है, तब लोकतंत्र की कार्यप्रणाली बाधित होने लगती है। रचनात्मक उत्थल-पुथल के बिना लोकतंत्र एक अदृश्य तानाशाही का रूप लेने लगता है।

एक स्वस्थ लोकतंत्र तीन आवश्यक 'डी' पर टिका होता है- संवाद (डायलॉग), बहस (डिबेट) और विचार-विमर्श (डिलिबरेशन)। इसके बाद चौथा 'डी' निर्णय (डिसीजन) होना चाहिए, चाहे वह बहुमत से हो या सर्वसम्मति से। पहले तीन का उद्देश्य चौथे को रोकना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि अंतिम निर्णय से पहले उसे अलग-अलग तर्कों की कसौटी पर परखा जाए और सार्वजनिक छानबीन से गुजारा जाए। मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूल सिद्धांत स्पष्ट है - विपक्ष को अपनी बात कहने का अधिकार हो और सरकार को अपना निर्णय लागू करने का अधिकार। भारत में इस भावना की लगातार कमजोर किया जा रहा है। हाल ही में समाप्त हुए मानसून सत्र ने इस बीमारी को उजागर कर दिया। दोनों सदनों ने 11 विधेयक पारित किए। इनमें से सात पर लोकसभा में पांच मिनट या उससे भी कम चर्चा हुई, कुल मिलाकर केवल 28 मिनट। 11 में से नौ विधेयक ऐसे थे जिन पर प्रभारी मंत्री के अलावा किसी अन्य सदस्य ने बोलने की आवश्यकता महसूस नहीं की। सत्र का आखिरी दिन इस गिरावट की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मौजूद थे। गृह मंत्री अमित शाह भी मौजूद थे।

विपक्ष कई सप्ताह से मांग कर रहा था कि वे छात्रों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई के मुद्दे पर जवाब दें। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और उनके वरिष्ठ सहयोगी भी मौजूद थे। फिर भी सदन उस अवसर को सार्थक बहस में



नहीं बदल सका। पुरानी पीढ़ी के राजनीतिक प्रबंधक चुनावी मौसम और संसदीय मौसम के बीच का अंतर समझते थे।

प्रमोद महाजन, कमलनाथ और गुलाम नबी आजाद जैसे नेता सार्वजनिक रूप से कड़ा संघर्ष कर सकते थे, लेकिन निजी तौर पर समझौते भी कर लेते थे, क्योंकि वे जानते थे कि दूसरे पक्ष पर भी अपनी तरह के दबाव होते हैं। उनका काम केवल अपनी पार्टी का बचाव करना नहीं था, बल्कि असहमति के बावजूद सदन को चलते रहना भी था। चुपचाप समझाने-बुझाने की यह कुशलता सभी दलों के मौजूदा नेतृत्व में गायब है। बहुमत शासन करने का जनादेश है, विपक्ष को परेशान करने का लाइसेंस नहीं। एक मजबूत नेता को सवालों का सामना करने और अपने विधायी तथा प्रशासनिक फैसलों की जांच के लिए तैयार रहना चाहिए।

विपक्ष को सरकार के कार्यक्रम पर वोटो लगाने का अधिकार नहीं है, लेकिन उसे इस पर जोर देने का पूरा अधिकार है कि विधेयकों पर चर्चा हो और उन्हें संख्या के बल पर पारित करने से पहले उनकी गंभीरता से जांच की जाए। दुर्भाग्य से, लंबे समय से संख्याबल का इस्तेमाल विरोधी विचारों को दबाने के लिए किया जाता रहा है।

सभी सत्तारूढ़ दलों ने अपने-अपने समय में संख्यात्मक बढ़त का इस्तेमाल सदन की कार्यवाही सीमित करने के लिए किया है। यह गिरावट केवल मौजूदा सरकार के समय से शुरू नहीं हुई। 13वीं लोकसभा 356 दिन, 14वीं 332 दिन, 15वीं 357 दिन और 16वीं 331 दिन बैठी। 17वीं लोकसभा केवल 274 दिन बैठी, जो किसी पूर्ण कार्यकाल वाली लोकसभा के लिए सबसे कम था।

अकेली 15वीं लोकसभा में ही व्यवधानों के कारण 803 घंटे का समय बर्बाद हुआ। जब संसद कम दिनों तक बैठती है, अव्यवस्था के कारण घंटे गंवाती है और कम विधेयक विस्तृत अध्ययन के लिए भेजे जाते हैं, तो कार्यालिका की शक्ति स्वतः बढ़ जाती है। सरकार और विपक्ष दोनों द्वारा शक्तियों के दुरुपयोग पर औपचारिक नियंत्रण केवल कागजों तक ही सीमित रह जाता है, जिससे सहभागी लोकतंत्र का सिद्धांत पूरी तरह ध्वस्त हो जाता है। यही पैटर्न राज्यों में भी दिखाई देता है, जहां कई विधानसभाएं साल में 50 दिनों से भी कम समय तक बैठती हैं।

केवल चुनाव लोकतंत्र को स्वस्थ नहीं रखते। विधायिकाओं को उन लोगों से सवाल करने के लिए पर्याप्त समय, अधिकार और गंभीरता चाहिए जो शासन करते हैं। समाधान न तो सरकार को कमजोर करने में है और न ही विपक्ष को सरकार का काम रोकने देने में। भारत को लेन-देन और समझौते की राजनीति की ओर लौटने की जरूरत है - प्रक्रिया के स्तर पर थोड़ा समझौता करके सार्थक परिणाम हासिल करना, दूसरे पक्ष को अपनी बात रखने देना ताकि अपनी दलील और मजबूत की जा सके। यह कमजोर राजनीति नहीं है।

यह संसदीय राजनीति का व्यावहारिक व्याकरण है। चुनाव राजनीतिक लामबंदी को पुरस्कृत करते हैं, लेकिन संसद बातचीत और समझौते की मांग करती है। सत्तारूढ़ गठबंधन या प्रधानमंत्री सदन को अपनी चुनौती जीत का मात्र विस्तार नहीं मान सकते। इसी तरह विपक्ष भी व्यवधान को जवाबदेही का मुख्य प्रमाण नहीं बना सकता।

संसदीय संवाद का यह स्पष्ट क्षरण नागरिक समाज की ओर से कहीं अधिक खतरनाक प्रतिक्रिया को जन्म दे सकता है। जब नागरिक यह मानने लगेंगे कि संसद राजनीतिक संघर्षों का समाधान करने में सक्षम नहीं है, तो वे सड़कों और अन्य गैर-संसदीय टकरावों की ओर देखेंगे। राजनीतिक वर्ग के पास अभी भी इस गिरावट को रोकने का समय है। सरकार को टकराव के विनाशकारी परिणामों तक पहुंचने से पहले बातचीत करनी चाहिए। विपक्ष को सवाल पूछने चाहिए, लेकिन सदन को ठप नहीं करना चाहिए।

सनत जैन

भारत के कई राज्यों में छात्रों के आंदोलन सड़कों पर आ गए हैं। पिछले दो माह से जेन-जेड और जेन-अल्फा के हजारों छात्र विभिन्न राज्यों में प्रदर्शन करने के लिए सड़कों पर उतर रहे हैं। यह हवा शहरों से निकलकर गांव की तरफ पहुंच रही है। यह जो नई पीढ़ी है, यह अपने भविष्य और वर्तमान की जरूरत को ध्यान में रखते हुए प्रदर्शन के लिए सड़कों पर उतर रही है। ऐसे समय पर केंद्र सरकार, राज्य सरकारें तथा भाजपा वंदे मातरम और इतिहास के मुद्दों को उठाकर ऐसा लगता है कि आंख बंद करके वह इस बदलाव को अनदेखा कर रहे हैं। आज का युवा अपनी जरूरत और भविष्य को लेकर बहुत चिंतित है। सरकार इसकी गंभीरता को शायद समझ नहीं पा रही है, जिसके कारण यह आंदोलन दिन-प्रतिदिन बढ़ते चले जा रहे हैं। विभिन्न राज्यों में छोटे-छोटे बच्चे अपने स्कूल में शिक्षक नहीं होने, स्कूल में पानी की व्यवस्था नहीं होने, पंखा नहीं होने, स्कूल की बिल्डिंग जर्जर होने तथा खराब सड़कों के कारण सड़कों पर आ रहे हैं। पिछले 12 वर्षों में जो विकास की तस्वीर डबल इंजन की सरकारों द्वारा दिखाई जा रही थी उसके विपरीत अब गांव-गांव में चल रहे आंदोलन यह बता रहे हैं जब प्राइमरी और मिडिल स्कूलों की इतनी यथनीय हालत है, ग्रामीण सड़क पूरी तरह से खराब है, देश में एक लाख स्कूल बंद हो चुके हैं, जो स्कूल चल रहे हैं, उनका भागवान ही मालिक है। 12 से 16 साल के बच्चे जिस आक्रामक तरीके से आकर अपनी बात रख रहे हैं, सरकार और भाजपा इसे एक तरह से नजर अंदाज कर रही है। इतिहास के बल पर 40 करोड़ बच्चों को समझाया और बुझाया नहीं जा सकता है। उनके पास भविष्य के सब सपने हैं। करोड़ों युवा जो ग्रेजुएट हो चुके हैं, कई वर्षों से बेरोजगार हैं। ये कई तरह की भर्ती और प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले चुके हैं। हर परीक्षा के लिए बार-बार शुल्क चुकाते हैं। परीक्षा देने के लिए सैकड़ों किलोमीटर दूर जाते हैं। उनकी उम्र निकल रही है। इसके बाद भी उनके लिए नौकरी नहीं मिल पा रही है।

इसी तरह से जो छात्र अभी मिडिल और हाई स्कूल में



है उनके स्कूलों में टीचर नहीं है। पढ़ाई की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। तरह-तरह की परेशानियां हैं। सरकार को समझना होगा मोबाइल युग की यह पीढ़ी सबसे ज्यादा समझदार है। रही सही कसर इंटरनेट, सोशल मीडिया, गोक, एआई, गूगल इत्यादि प्लेटफार्म से यह बच्चे झूठ और सच को जानने में जरा भी देर नहीं करते हैं। यह बच्चे वर्तमान में जीना चाहते हैं। इनका इतिहास से कोई लेना देना नहीं है। यह अपने परिवार से भी तब तक जुड़े रहते हैं जब तक उनकी जरूरतें पूरी होती हैं। जरूरत पूरी नहीं होने पर यह अपने माता-पिता और परिवारजनों से भी विद्रोह करने की मुद्रा में होते हैं। पिछले कुछ वर्षों से धार्मिक धुंवीकरण के आधार पर भाजपा ने लगातार कई चुनाव जीत लिए हैं। भावात्मक रूप से लोगों को प्रभावित करने के लिए दशकों पुराने गढ़े मुद्दों को कब्र से निकाल कर राजनीति अब संभव नहीं रह गई है। इतिहास को सब अपने-अपने तरीके से अभी तक देख रहे थे, यह जो नई पीढ़ी आई है यह तुरंत गूगल, एआई और गोक के प्लेटफार्म में जाकर सच और झूठ का पता लगा लेती है। इसमें भारतीय जनता पार्टी को जो सबसे बड़ा नुकसान हो रहा है वह यह है, जो नई पीढ़ी इतिहास को नहीं जानती थी पिछले वर्षों में उसे जिस तरह से बताया गया था उसी को उसने सच मान लिया था, लेकिन अब वह सच का पता लगाना सीख गई है। इस झूठ और सच के बीच में वह पडना भी नहीं चाहती है। उसकी आज की जरूरतें हैं, कल का भविष्य है इतिहास से उसे कुछ मिल नहीं रहा है।

पिछले 12 वर्षों से देश में डबल इंजन की सरकारें हैं। समय-समय पर इन्हें बड़े-बड़े सपने दिखाए गए, लेकिन

अब ‘दिमागी नक्सली’, प्रधानमंत्री ने छेड़ी नई बहस..!

ऋतुपर्ण दवे

लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 80वें स्वाधीनता दिवस पर उद्बोधन के दौरान विरोधियों पर कसा गया तंज अब नई और राष्ट्रीय बहस का विषय बन गया है। प्रधानमंत्री की दिमागी नक्सलवाद कह कर की गई टिप्पणी ने नया सियासी तूफान खड़ा कर दिया है। प्रधानमंत्री ने किसे या किन्हें दिमागी नक्सली कहा, क्या विपक्ष और आंदोलनकारी छात्रों को या सरकार पर उंगली उठाने वाले हरेक को या फिर संसद न चलने देने वाले विपक्ष को ? निश्चित रूप से इस टिप्पणी पर अभी आगे काफी कुछ सियासत होनी तय है। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि हथियार उठाने वाले नक्सलियों से तो निपट लिया गया, लेकिन अब देश को ‘दिमागी नक्सलियों’ से सतर्क रहने और उन्हें अलग-थलग करने की जरूरत है। उन्होंने यह भी कहा कि नक्सलवाद और माओवादी हिंसा ने दशकों तक देश के बड़े हिस्से को प्रभावित किया जिसमें हजारों लोगों की जान गई। उनका इशारा था कि अब इस चुनौती के एक दूसरे स्वरूप यानी दिमागी नक्सलवाद से निपटना जरूरी हो गया है। प्रधानमंत्री ने अपनी टिप्पणी में दिमागी नक्सली की कोई स्पष्ट या औपचारिक परिभाषा तो दी नहीं और न ही कोई कानूनी परिभाषा बताई। भले ही उनकी टिप्पणी इशारों में रही, लेकिन राजनीतिक और वैचारिक संदर्भ में इसके मायने बहुत गहरे हैं। जंतर-मंतर पर हाल ही में जिस तरह कॉंक्रोक जनता पार्टी के बैनर तले छात्र आंदोलन हुआ जो देखते-देखते देश का एक बड़ा और अप्रत्याशित आन्दोलन बन खड़ा हुआ। अब उसके फैलते जाने का अंदेश भी दिखाई दे रहा है। कहीं उसी पर तो यह टिप्पणी नहीं की ? या फिर हाल ही में संसद में लगातार विरोध बने रहने और नेता विपक्ष राहुल गांधी के तमाम मंचों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को चुनौती देने की खीझ पर तो निशाना नहीं लगाया ? सच यह है कि हाल के दिनों में जेन-जी के जंतर-मंतर पर

आन्दोलन के बाद 12 वर्षों में पहली बार मोदी सरकार को बैकफुट पर आना पड़ा और शिक्षा मंत्री का इस्तीफा लेना पड़ा। उससे भी गंभीर और बड़ी बात यह कि इस मुद्दे को विषय खासकर राहुल गांधी ने लपक लिया और संसद से सड़क तक प्रभावशाली तरीके से उठाया। निश्चित रूप से जेन-जी आन्दोलन के चलते महज युवा ही नहीं बल्कि उनके अधिभावक भी नाराज दिखे। इससे पहली बार लगा कि मोदी सरकार परेशान है। देखते ही देखते छात्रों की पिटाई, बिना वर्दी के पुलिस वालों की मौजूदगी, पैलेट गन और कील लगी लाठियों के उपयोग को राहुल ने राष्ट्रीय मुद्दा बना दिया। कहीं दिमागी नक्सली कहकर उनका इशारा इसी पर नहीं था ? क्या प्रधानमंत्री ने दिमागी नक्सल शब्द का इस्तेमाल करके देश को सुरक्षा, वैचारिक स्थिरता और सामाजिक एकता से जुड़ाव रखने का साफ और कड़ा संदेश तो देने की कोशिश तो नहीं की ? अपने उद्बोधन के दौरान उन्होंने यह भी कहा कि युवाओं को हिंसा और अराजकता से दूर रहना होगा और विकास तथा रचनात्मक कार्यों में सहयोग देना होगा। जाहिर है प्रधानमंत्री दिमागी नक्सलवाद के जरिए विरोधियों को लताड़ तो लगा रहे थे। साथ ही रूटे या उनसे नाराज जेन-जी को भी संदेश दे रहे थे कि वो रचनात्मक कार्यों में सहयोग करें। जंगली नक्सली खत्म हो गए हैं लेकिन जो दिमागी नक्सली सिर उठा रहे हैं, उन्हें पहचानने की बात किसके लिए कह गए ? उन्होंने अगे जो कहा वह और भी ख़ास है जिसमें जंगल नक्सलियों की जगह अब शहरों, शिक्षण संस्थानों और बौद्धिक मंचों पर सक्रिय दिमागी नक्सल के लेने की बात कह, सरकार का विरोध करने वालों को तितलियाल दिया। उन्होंने इनसे सावधान रहने का आग्रह भी किया। हथियारबंद नक्सल तो गए, लेकिन दिमागी नक्सल मौके की तलाश में हैं जिन्हें पहचानना होगा। उन्होंने साफ किया कि यह वर्ग सीधे हथियार नहीं उठाता, बल्कि अपनी विचारधारा से देश में भ्रम और अराजकता फैलाने की फिराक में रहता है।

ध्यान : सफलता भी, शांति भी

सफलता के साथ मन के भीतर शांति मिलना मुश्किल होता है। आज के अधिकतर युवाओं के साथ यही समस्या है कि वे सफल तो हो रहे हैं लेकिन उस सफलता में कहीं शांति नहीं है। सफलता के साथ शांति का सबसे बेहतरीन मार्ग बौद्ध धर्म में बताया गया है। बौद्ध धर्म ने हर परेशानी का हल ध्यान में तलाशने का प्रयास किया है और इसमें वे काफी हद तक सफल भी हुए हैं। बौद्ध धर्म ने अपना सारा ध्यान मेडिटेशन पर ही केंद्रीत किया है। मन को शांति तब मिलती है जब आप को किए गए काम में आनंद भी आ रहा हो। कई लोगों के साथ परेशानी यह भी है कि जो काम वे कर रहे हैं, उसे एक बोझ या केवल काम मान कर ही कर रहे हैं। बौद्ध धर्म ध्यान के जरिए पहले किसी भी काम में अपनेआप को डुबोने और फिर उसमें आनंद तलाशने को कहता है। जब काम में आनंद आने लगे तो सफलता अपनेआप मिल जाती है। इस सफलता में शांति भी होती है। बौद्ध धर्म कहता है कि हर व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में थोड़ी देर मेडिटेशन भी करना चाहिए। अपनी दिनचर्या को कुछ ऐसे प्लान करें कि उसमें सुबह या शाम का थोड़ा समय ध्यान के लिए रहे। ध्यान से मन एकाग्र होगा, शरीर शांत और मन केंद्रीत रहेगा। इससे हमें ऊर्जा तो मिलेगी ही, साथ हम जो भी काम कर रहे हैं, सभे बेहतर परिणाम मिलेंगे। बौद्ध धर्मा का आधार ही ध्यान है। इसी में उनकी सफलता का मूल मंत्र और रहस्य छिपा हुआ है।

आस्था है तो मूर्ति में भी दिखेंगे भगवान

आपके घर में भगवान की बहुत सी तस्वीर लगी होगी। पूजा घर में देवी-देवताओं की कुछ मूर्तियां भी हो सकती हैं लेकिन कभी आपने महसूस किया है कि मूर्तियां और तस्वीर जीवित हो उठी हैं अर्थात वह जड़ अवस्था को छोड़कर चेतन जान पड़ने लगे हैं। हो सकता है कुछ ने ऐसा महसूस किया हो। अगर आपने महसूस किया है तो यह समझ लीजिए कि जिस घड़ी आपने ईश्वर को चेतन जाना उस समय वास्तव में ईश्वर उस मूर्ति में वर्तमान थे। जब आपने उन्हें मात्र मूर्ति मानकर पूजा किया तो वह मात्र मूर्ति बने रहे। बहुत से लोग यह कहते हैं कि हमने भगवान की मूर्ति को लड्डू का भोग लगाया, सुबह-शाम धूप-दीप दिखाया लेकिन ईश्वर ने मेरे लिये किया क्या। वास्तव में यह ईश्वर की गलती नहीं है कि आपकी पूजा का फल आपको नहीं मिला।

इस संदर्भ में एक कथा है कि एक व्यक्ति हर दिन सुबह शाम गणेश जी की पूजा करता है। धूप-दीप दिखाता। लेकिन कई वर्षों तक पूजा करने के बाद भी उसे जब कुछ लाभ नहीं दिखा तो गणेश जी से नाराज हो गया। इस व्यक्ति ने गणेश जी की पूजा बंद करके लक्ष्मी माता की पूजा शुरू

कर दी। इसने देखा कि जो धूप दीप वह लक्ष्मी मां को दिया रहा है उसका धुआं गणेश जी के पास भी जा रहा है। वह झट से रूई लेकर आया और गणेश जी नाक में लगा दिया, ताकि गणेश जी को धूप-दीप का गंध भी नहीं मिले। गणेश जी की मूर्ति जड़ से चेतन अवस्था में आकर हंसने लगी। व्यक्ति बड़ा हैरान हुआ कि, आखिर जब तक मैं धूप-दीप दिखाकर गणेश जी की पूजा करता रहा तब तो गणेश जी नहीं आये, लेकिन आज जब मैंने उनकी नाक रूई से बंद कर दी तो गणेश जी भला कैसे मूर्ति में प्रकट हो गये। गणेश जी अपने भक्त के मन की बात समझ गये और बोले जब तक तुम मुझे जड़ मानते रहे अर्थात मिट्टी की मूर्ति मानकर पूजते रहे तब तक मैं जड़ बना रहा। आज तुमने मेरी नाक में रूई लगाया ताकि मैं धूप-दीप का गंध न प्राप्त कर सकूँ, इसका मतलब है कि तुमने आज मुझे चेतन अर्थात जीवित मान लिया है, बस यही कारण है कि मैं तुम्हारे सामने जीवित उपस्थित हूँ। यानी ईश्वर की मूर्ति में चावल लेकर संस्कृत के कुछ मंत्र बोलकर मूर्ति पर चावल फेंकने से



ईश्वर की मूर्ति में प्राण का संचार नहीं होता है। मूर्ति में प्राण का संचार हमारी आस्था से होता है। अगर बाजार से मूर्ति खरीदकर ले आये और पूर्ण आस्था से मूर्ति को साक्षात मानकर उनकी पूजा करने लगे तो मूर्ति में भी ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं। मूर्ति पर मंत्र द्वारा चावल फेंककर प्राण प्रतिष्ठा का तात्पर्य भी यही है कि व्यक्ति में यह विश्वास उत्पन्न हो कि मूर्ति में भगवान प्रवेश कर चुके हैं।

गुड़ का दान करने से दरिद्रता का नाश होता है

श्राद्ध पक्ष में दान की महिमा के बारे में बताया गया है। इन दिनों क्या दान करना चाहिए और क्यों? इस बारे में हमारे पौराणिक ग्रंथों में विस्तार से उल्लेख मिलता है। श्राद्ध पक्ष में दान की महिमा के बारे में बताया गया है। इन दिनों क्या दान करना चाहिए और क्यों? इस बारे में हमारे पौराणिक ग्रंथों में विस्तार से उल्लेख मिलता है। वैसे, इन दिनों अनाज का दान करना शुभ माना गया है। अनाज में गेहूँ, चावल का दान गरीबों और ब्राह्मणों को किया जाता है। इसके पीछे मंशा यह रहती है कि कोई भी व्यक्ति इन दिनों में भूखा न रहे। नमक का दान भी कर सकते हैं। इससे पितर जल्द प्रसन्न होते हैं। इन दिनों में नमक का दान करना बेहद उपयुक्त माना गया है। तिल का दान भी श्रेष्ठ माना गया है। विशेष तौर पर काले तिल का दान करने से नकारात्मक शक्तियों का साया और संकट, विपदाओं से निजात मिलती है। यदि व्यक्ति को किसी तरह की आर्थिक समस्या नहीं है तो वह सोने-चांदी का भी दान ब्राह्मणों और जरूरतमंद लोगों को कर सकता है। सोने का दान करने से घर में कलह-क्लेश नहीं आता है। वहीं चांदी का दान करने से पितरों का आशीर्वाद मिलता है। इसके अलावा गुड़, घी, भूमि का दान भी कर सकते हैं। गुड़ का दान करने से दरिद्रता का नाश होता है। घी का दान करना शुभ माना गया है। भूमि दान करने से आर्थिक रूप से संपन्नता आती है। इन सभी में गौ दान का सबसे ज्यादा पुण्यदायक माना गया है। क्योंकि गौ दान करने से सुख-संपत्ति मिलती है।

जब दो ब्रम्हास्त्रों का सामना हुआ



महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। कौरवों की ओर से केवल तीन महारथी ही जीवित बचे थे – अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा। दुर्योधन की मृत्यु से दुखी अश्वत्थामा ने पांडवों को छल से मारने की प्रतिज्ञा की। उसने दुर्योधन को मरते हुए वचन दिया था कि जैसे भी हो वो पांचों पांडवों को अवश्य मार डालेगा।

कृपाचार्य ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की पट अंततः उन्होंने भी उसका साथ देने की स्वीकृति भर दी। युद्ध के समाप्त होने के पश्चात् कृष्ण पाँचों पांडवों को गंगा तट पर जागरण के लिए ले गए थे और उनके शिविर में उनके पाँचों पुत्र प्रतिविन्ध्य, सुतसोम, श्रुत्कार्मन, शतानीक एवं श्रुतसेन सोए हुए थे। इसकी जानकारी अश्वत्थामा को नहीं थी। उसे लगा कि पांडव ही वहां

सोए हुए हैं। उन्होंने इस पाँचों को सोते हुए ही पांडव समझ कर मार डाला और प्रसन्नतापूर्वक लौट गए। उनके साथ साथ उन्होंने वहां विश्राम कर रहे सरे योद्धाओं को मौत के घाट उतार दिया जिसमे धिस्थुमन और शिखंडी भी थे। जब पांडव और द्रौपदी वापस आए तो उपने पुत्रों को मारा हुआ देख द्रौपदी विलाप करने लगी। उसके क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। उसने पांडवों से कहा कि जब तक वो अश्वत्थामा का मारा हुआ मुख नहीं देख लेती वो अन्न जल ग्रहण नहीं करेगी।

अश्वत्थामा को पकड़ने के लिए पांडव चल दिए जो भागता हुआ महर्षि व्यास के आश्रम में पहुंच चुका था। वहां पहुंचकर भीम ने उससे युद्ध कर उसे परस्त किया। अपने पिता आचार्य द्रोण के वरदान के कारण अश्वत्थामा अमर था। उसे ब्रम्हास्त्र का ज्ञान भी था। उसने

पांडवों को समाप्त करने के लिए उनपर ब्रम्हास्त्र चला दिया। पांडवों में ब्रम्हास्त्र का ज्ञान केवल अर्जुन को था। जब कृष्ण ने देखा कि ये ब्रम्हास्त्र पांडवों को मार कर ही रहेगा तो उन्होंने विवश होकर अर्जुन से भी ब्रम्हास्त्र चलने को कहा क्योंकि एक ब्रम्हास्त्र का सामना केवल दूसरा ब्रम्हास्त्र ही कर सकता था लेकिन इससे पूरी पृथ्वी का विनाश हो जाता। जब महर्षि व्यास ने देखा कि दोनों ब्रम्हास्त्र टकराने ही वाले हैं तो उन्होंने देवर्षि नारद की सहायता से दोनों ब्रम्हास्त्रों को रोक दिया। उन्होंने अर्जुन और अश्वत्थामा को समझाया कि इससे पूरी पृथ्वी का विनाश हो जाएगा और उन दोनो को अपना ब्रम्हास्त्र वापस लेने को कहा।

उनकी आज्ञा मान कर अर्जुन ने तो अपना ब्रम्हास्त्र वापस ले लिए किन्तु अश्वत्थामा ब्रम्हास्त्र को वापस लेने कि कला नहीं जानता था। महर्षि व्यास ने कहा कि अगर वो अपना ब्रम्हास्त्र वापस नहीं ले सकता तो उसकी दिशा बदल कर उसके प्रभाव को सीमित कर दे। बदले की भावना में जलते अश्वत्थामा ने अपने ब्रम्हास्त्र की दिशा बदल कर उसे अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ पर गिरा दिया जिससे उसके गर्भ से एक मृत शिशु का जन्म हुआ।

उसके इस कृत्य से पांडव बड़े क्रोधित हुए। वो ब्राम्हण था और अमर भी इस लिए वो उसका वध तो नहीं कर सकते थे इसलिए उन्होंने उसके मस्तक की मणि लेकर उसे आजीवन भटकने के लिए छोड़ दिया। बाद में कृष्ण की कृपा से उस शिशु को नया जीवनदान मिला जिससे उसका नाम जन्मेजय पड़ा।

भगवान का सबसे प्रिय आहार अहंकार

अहंकार शब्द बना है अहं से, जिसका अर्थ है ‘मैं’। जब व्यक्ति में यह भावना आ जाती है कि ‘जो हूं सो मैं, मुझसे बड़ा कोई दूसरा नहीं है’ तभी व्यक्ति का पतन शुरू हो जाता है। द्वापर युग में सहस्रबाहु नाम का राजा हुआ। इसे बल का इतना अभिमान हो गया कि शिव से ही युद्ध करने पहुंच गया। भगवान शिव ने सहस्रबाहु से कह दिया कि तुम्हारा पतन नजदीक आ गया है। परिणाम यह हुआ कि भगवान श्री कृष्ण से एक युद्ध में सहस्रबाहु को पराजित होना पड़ा। रावण विद्वान होने के साथ ही महापराक्रमी था। उसे अपने बल और मायावी विद्या का अहंकार हो गया और उसने सीता का हरण कर लिया। इसका फल रावण को यह मिला कि रावण का वंश सहित सर्वनाश हो गया। अंत काल में उसका सिर भगवान राम के चरणों में पड़ा था। भगवान कहते हैं ‘मेरा सबसे प्रिय आहार अहंकार है’ अर्थात अहंकारियों का सिर नीचा करना भगवान को

सबसे अधिक पसंद है। अहंकारी का सिर किस प्रकार भगवान नीच करते हैं इस संदर्भ में एक कथा है कि, नदी किनारे एक सुन्दर सा फूल खिला। इसने नदी के एक पत्थर को देखकर उसकी हंसी उड़ायी कि, तुम किस प्रकार से नदी में पड़े रहते हो। नदी की धारा तुम्हें दिन रात ठोकर मारती रहती है। मुझे देहो मैं कितना सुन्दर हूँ। हवाओं में झूमता रहता हूँ। पत्थर फूल की बात को चुपचाप सुनता रहा। पानी में घिसकर पत्थर ने शालिग्राम का रूप ले लिया था। किसी व्यक्ति ने उसे उठाकर अपने पूजा घर में स्थापित किया और उसकी पूजा की। पूजा के समय उस व्यक्ति ने फूल को शालिग्राम के चरणों में रख दिया। फूल ने जब खुद को पत्थर के चरणों में पाया तो उसे एहसास हो गया कि उसे अपने अहंकार की सजा मिली है। पत्थर ने अब भी कुछ नहीं कहा वह फूल की मनःस्थिति को देखकर मुस्कराता रहा।



नित्य काशी में स्नान करते हैं भगवान दत्तात्रेय

आज भगवान दत्तात्रेय की जयंती है। दत्तात्रेय ऋषि अत्रि गृहण करते हैं। सहाद्री की कन्दराओं में यह विश्राम किया करते हैं। इसी मान्यता के कारण काशी स्थिति मणिकर्णिकाघाट की दत्तपाटु को इनके भक्त पूजनीय स्थान मानते हैं। तन्त्र शास्त्र के मूल ग्रन्थ रुद्रयामल के हिमवत् खण्ड में इस बात का उल्लेख किया गया है कि दत्तात्रेय भगवान सच्चे मन से ध्यान करने मात्र से भक्तों के कष्ट दूर करते हैं। इसलिए इन्हें स्मृतिगामी भी कहा जाता है। इनके विषय में मान्यता है कि यह प्रातः काल में ब्रह्मा रूप में रहते हैं। दोपहर में विष्णु रूप में तथा शाम के समय शिव रूप में विराजते हैं। भगवान दत्तात्रेय की तस्वीरों में उनके साथ एक गाय और चार कुत्ते दिखाये जाते हैं। मान्यता है कि जब यह अनुसूया के घर अवतरित हुए तब धरती ने गाय एवं वेदों ने कुत्ते का स्वरूप धारण कर लिया और अपने संरक्षण के लिए दत्तात्रेय के साथ रहने लगे।

तन्त्र शास्त्र के मूल ग्रन्थ रुद्रयामल के हिमवत् खण्ड में इस बात का उल्लेख किया गया है कि दत्तात्रेय भगवान सच्चे मन से ध्यान करने मात्र से भक्तों के कष्ट दूर करते हैं। इसलिए इन्हें स्मृतिगामी भी कहा जाता है। इनके विषय में मान्यता है कि यह प्रातः काल में ब्रह्मा रूप में रहते हैं। दोपहर में विष्णु रूप में तथा शाम के समय शिव रूप में विराजते हैं। भगवान दत्तात्रेय की तस्वीरों में उनके साथ एक गाय और चार कुत्ते दिखाये जाते हैं। मान्यता है कि जब यह अनुसूया के घर अवतरित हुए तब धरती ने गाय एवं वेदों ने कुत्ते का स्वरूप धारण कर लिया और अपने संरक्षण के लिए दत्तात्रेय के साथ रहने लगे।

चन्द्रमा एवं ऋषि दुर्वासा ने तपस्या पर जाने से पूर्व अपना तेज और बल दत्तात्रेय को प्रदान कर दिया। इसके कारण दत्तात्रेय में ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश एकाकार हो गये। पुराण के अनुसार भगवान दत्तात्रेय जीवन-पारण के चक्र से मुक्त हैं और आज भी योगबल से संसार में भ्रमण करते हैं। मान्यता है कि दत्तात्रेय प्रतिदिन प्रातः काशी में गंगा-स्नान करते हैं। कोल्हापुर में नित्य जप और माहुरीपुरमें भिक्षा

आज भगवान दत्तात्रेय की जयंती है। दत्तात्रेय ऋषि अत्रि गृहण करते हैं। सहाद्री की कन्दराओं में यह विश्राम किया करते हैं। इसी मान्यता के कारण काशी स्थिति मणिकर्णिकाघाट की दत्तपाटु को इनके भक्त पूजनीय स्थान मानते हैं। तन्त्र शास्त्र के मूल ग्रन्थ रुद्रयामल के हिमवत् खण्ड में इस बात का उल्लेख किया गया है कि दत्तात्रेय भगवान सच्चे मन से ध्यान करने मात्र से भक्तों के कष्ट दूर करते हैं। इसलिए इन्हें स्मृतिगामी भी कहा जाता है। इनके विषय में मान्यता है कि यह प्रातः काल में ब्रह्मा रूप में रहते हैं। दोपहर में विष्णु रूप में तथा शाम के समय शिव रूप में विराजते हैं। भगवान दत्तात्रेय की तस्वीरों में उनके साथ एक गाय और चार कुत्ते दिखाये जाते हैं। मान्यता है कि जब यह अनुसूया के घर अवतरित हुए तब धरती ने गाय एवं वेदों ने कुत्ते का स्वरूप धारण कर लिया और अपने संरक्षण के लिए दत्तात्रेय के साथ रहने लगे।

आज भगवान दत्तात्रेय की जयंती है। दत्तात्रेय ऋषि अत्रि गृहण करते हैं। सहाद्री की कन्दराओं में यह विश्राम किया करते हैं। इसी मान्यता के कारण काशी स्थिति मणिकर्णिकाघाट की दत्तपाटु को इनके भक्त पूजनीय स्थान मानते हैं। तन्त्र शास्त्र के मूल ग्रन्थ रुद्रयामल के हिमवत् खण्ड में इस बात का उल्लेख किया गया है कि दत्तात्रेय भगवान सच्चे मन से ध्यान करने मात्र से भक्तों के कष्ट दूर करते हैं। इसलिए इन्हें स्मृतिगामी भी कहा जाता है। इनके विषय में मान्यता है कि यह प्रातः काल में ब्रह्मा रूप में रहते हैं। दोपहर में विष्णु रूप में तथा शाम के समय शिव रूप में विराजते हैं। भगवान दत्तात्रेय की तस्वीरों में उनके साथ एक गाय और चार कुत्ते दिखाये जाते हैं। मान्यता है कि जब यह अनुसूया के घर अवतरित हुए तब धरती ने गाय एवं वेदों ने कुत्ते का स्वरूप धारण कर लिया और अपने संरक्षण के लिए दत्तात्रेय के साथ रहने लगे।



भारत-जापान समुद्र में करेंगे चीन की घेराबंदी

नईदिल्ली। भारत और जापान ने अपने रक्षा संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है. दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक में समुद्री सुरक्षा समझौता साइन किया गया. इसमें नौसेना सहयोग, सूचना साझाकरण, खोज और बचाव (स्क), मानवीय सहायता और आपदा राहत (।।।।।) जैसे क्षेत्रों को शामिल किया गया. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों पक्ष नौसेना जहाजों के संयुक्त विकास और डिजाइन पर काम करने पर सहमत हुए. जापान की एडवांस तकनीक और भारत की उत्पादन क्षमता का मेल %मेक इन इंडिया% को बढ़ावा देगा. यह कदम हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती गतिविधियों के बीच रणनीतिक महत्व रखता है. रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और जापानी रक्षा मंत्री शिन्जिरो कोइजुमी ने 20 अगस्त 2026 को नई दिल्ली में द्विपक्षीय बैठक की. इसी बैठक में ये फैसले लिए गए. भारत और जापान ने मेरीटाइम डोमेन अवेयरनेस सूचना साझाकरण पर नया समझौता किया।

ठग सुकेश की अरविंद केजरीवाल को धमकी

नईदिल्ली दिल्ली की मंडोली जेल में बंद ठग सुकेश चंद्रशेखर एक बार फिर चर्चा में हैं. उन्होंने एक बार फिर आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल और सत्येंद्र जैन को एक तीखी चिट्ठी लिखी है. इस लेटर के सामने आने के बाद राजनीतिक गलियारों में एक बार फिर से गहमागहमी बढ़ गई है. सुकेश ने इस चिट्ठी में दावा किया है कि अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी के नेताओं को जल्द जेल जाना पड़ सकता है. उन्होंने लिखा कि आप पार्टी के नेताओं के जेल जाने का दूसरा दौर यानी %2.0% अब बहुत जल्द शुरू होने वाला है. उसने अपने खास अंदाज में चेतावनी दी है कि भ्रष्टाचार के मामलों में एक और नया अध्याय जुड़ने जा रहा है. वह इस मामले में चुप बैठने वाला नहीं है.सुकेश चंद्रशेखर ने अपनी इस ताजा चिट्ठी में कई गंभीर और बड़े आरोप लगाए हैं. उसने चेतावनी दी है कि आने वाले दिनों में वह तीन और बड़े घोटालों का खुलकर पर्दाफाश करेगा।

स्कूलों की बदहाली पर मायावती ने सरकार को घेरा

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) सुप्रीमो मायावती ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि जेन-अल्फा यानी साल 2013 के बाद जन्मे बच्चे-बच्चियों में और उनके माता-पिता में बेहतर भविष्य और अच्छी शिक्षा को लेकर चिंता है, लेकिन यूपी और उत्तर भारत के राज्यों में स्कूलों की बदतर हालत की जमीनी हकीकत के कारण वे लोग अब मुखर हो गए हैं. उन्होंने कहा कि यह बेहद दुख और चिंता की बात है कि जिन मासूम बच्चे-बच्चियों के हंसने-खेलने और पढ़ने-लिखने के दिन हैं, उन्हें प्रारंभिक स्कूली शिक्षा के लिए बुनियादी सुविधाओं की मांग को लेकर भी सड़कों पर संघर्ष करने को मजबूर होना पड़ रहा है.मायावती ने एक्स पर कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेकर के शिक्षित बनों के आह्वान के कारण शिक्षा, खासकर स्कूली शिक्षा, बहुजन समाज के लोगों के लिए हमेशा विशेष चिंता का विषय रही है।

पंजाब में फिर साथ आएंगे भाजपा-अकाली?

पंजाब।पंजाब में 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले शिरोमणि अकाली दल और बीजेपी के बीच फिर से गठबंधन की अटकलें तेज हो गई हैं. अकाली दल की वरिष्ठ नेता और सांसद हरसिमरत कौर बादल ने संगरूर में एक रैली के दौरान दोनों दलों के संभावित गठबंधन को लेकर बड़ा संकेत दिया. उन्होंने कहा कि गठबंधन होते रहते हैं और जल्द ही लोगों को खुद पता चल जाएगा कि आगे क्या होने वाला है. जनसभा को संबोधित करते हुए हरसिमरत बादल ने कहा, %आपने स्किल यूनिवर्सिटी की जो मांग रखी है, वह बहुत अच्छी है. ये तो छोटे-छोटे काम हैं. गुरु साहिब कृपा करें. मेरा बोलना जरूरी नहीं है, इसलिए मैं अपनी बात यहीं रोकती हूं. आपको खुद ही पता चल जाएगा. उन्होंने आगे कहा, गुरु साहिब कृपा करके हमें शक्ति और बल दें. ऐसे समझौते हों जैसे दिल्ली से आपके विकास और तरक्की के काम होते थे. एक बार फिर पंजाब में विकास और तरक्की की नींव रखी जाए।

झारखंड में जेपीएससी परीक्षा रद्द करने के फैसले पर रोक

झारखंड।झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य की हेमंत सोरेन सरकार के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें झारखंड लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं को रद्द करने का फैसला अंलाया गया था. कोर्ट के इस आदेश के बाद जेपीएससी परीक्षाओं को लेकर स्थिति बदल गई है. दरअसल, झारखंड हाईकोर्ट ने जेपीएससी की 11वीं से 13वीं परीक्षा और फूड सेफ्टी ऑफिसर परीक्षा से जुड़े मामलों में बड़ा फैसला सुनाया है. हाईकोर्ट ने दोनों परीक्षाओं को लेकर राज्य सरकार की ओर से जारी आदेश पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है. कोर्ट ने राज्य सरकार को 15 दिनों के भीतर काउंटर एफिडेविट के साथ अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है. इस फैसले के बाद दोनों परीक्षा मामलों के याचिकाकर्ताओं को तत्काल प्रभाव से काम पर वापस लिए जाने का रास्ता साफ हो गया है. मामले की सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार के उस आदेश पर स्टे दिया, जिसके तहत दोनों परीक्षाओं से संबंधित कार्रवाई की गई थी. अब सरकार को कोर्ट के समक्ष अपना पक्ष और संबंधित दस्तावेज पेश करने होंगे।

ममता ने बीएसएफ-एसएसबी को जमीन नहीं दी : शाह

घुसपैठ रोको! अमित शाह बोले-सीएम अधिकारी ने तेजी दिखाई

कोलकाता। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को सिलीगुड़ी में एसएसबी फ्रंटियर हेडक्वार्टर में एसएसबी के कई प्रोजेक्ट्स की आधारशिला रखी। साथ ही, उन्होंने बॉर्डर फोर्स को ज़मीन देने में देरी के लिए ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली पिछली पश्चिम बंगाल सरकार की आलोचना भी की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि केंद्र सरकार ने पिछली राज्य सरकार से बॉर्डर सिक्वोरिटी फोर्स (बीएसएफ) के लिए ज़मीन देने का कई बार अनुरोध किया था। उन्होंने कहा कि हमने ममता बनर्जी से बीएसएफ को ज़मीन देने की लगातार अपील की, लेकिन उनके कार्यकाल के दौरान ऐसा नहीं किया गया। मैंने एक बार उनके ऑफिस जाकर उन्हें यह भी समझाया था कि यह ज़मीन बीएसएफ के लिए है, न कि भाजपा के लिए।

उन्होंने मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी को पद संभालने के 45 दिनों के अंदर बीएसएफ और एसएसबी को 1,129 एकड़ ज़मीन तेज़ी से देने का श्रेय दिया। शाह ने आगे कहा कि काम में यह तेज़ी इसलिए नहीं है कि वह भाजपा के मुख्यमंत्री हैं। वह समझते हैं कि जब तक घुसपैठ नहीं रुकेगी, तब तक न तो पश्चिम बंगाल और न ही भारत सुरक्षित है। शाह ने सिलीगुड़ी कॉरिडोर के रणनीतिक महत्व पर जोर दिया और खुली सीमाओं की सुरक्षा करने के लिए एसएसबी जवानों की तारीफ की।

उन्होंने कहा कि मैं हमेशा कहता हूँ कि सबसे मुश्किल काम एसएसबी जवानों का होता है जो खुली सीमा की सुरक्षा करते हैं। पीएम मोदी की सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा के नज़रिए से सिलीगुड़ी कॉरिडोर के महत्व को समझा है। यह एक संवेदनशील कॉरिडोर है जो 8 राज्यों को जोड़ता है, और यहाँ नेपाल, भूटान और बांग्लादेश की तीन



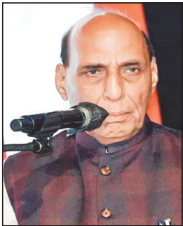
अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ मिलती हैं। हमने चोपड़ा, किशानगंज और धुबरी में अपनी मौजूदगी बढ़ाई है। केंद्रीय मंत्री ने सीमा सुरक्षा और प्रबंधन से जुड़े कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया और भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर सुरक्षा को मजबूत करने के लिए बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की आधारशिला रखी। लगभग 60 किलोमीटर लंबा और 22 किलोमीटर चौड़ा सिलीगुड़ी कॉरिडोर रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत के आठ पूर्वोत्तर राज्यों को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ता है। चिकन नेक के नाम से जाना जाने वाला यह संकरा रास्ता अपनी स्थिति के कारण बड़ी चुनौतियाँ पेश करता है; यह दक्षिण और पश्चिम में बांग्लादेश, उत्तर में तिब्बत (चीन) के बीच स्थित है और नेपाल, बांग्लादेश व भूटान के करीब है। कार्यक्रम में सुवेंदु अधिकारी ने कहा था पहली बार एसएसबी के कार्यक्रम में बंगाल के सीएम को आने का सौभाग्य मिला है। शाह ने इस पर कहा कि इसमें थोड़ा सुधार करना चाहता हूँ। उनके मुताबिक पुराने मुख्यमंत्री को भी कार्यक्रम में बुलाया जाता था, लेकिन वह आती नहीं थीं। फिर उन्होंने कहा हमने आपको बुलाया, आप आ गए, आपका स्वागत है।

कांग्रेस ने राष्ट्रीय एकता कमजोर की : राजनाथ

नईदिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने वंदे मातरम के सिर्फ़ शुरुआती दो पद गाने के 1937 के अपने रख को फिर से दोहराने के लिए कांग्रेस की कड़ी आलोचना की है और पार्टी के इस स्टैंड को असंवैधानिक और निंदनीय बताया है। सोशल मीडिया पर शेयर किए गए एक वीडियो मेंसेज में, सिंह ने संविधान और राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति कांग्रेस की प्रतिबद्धता पर सवाल उठाए और कहा कि संसद द्वारा पारित कानून सभी नागरिकों पर लागू होते हैं।

सिंह ने कहा कि अगर कोई इसे मानने से इनकार करता है, तो संविधान के प्रति उनकी निष्ठा निश्चित रूप से संदेह के घेरे में आ जाती है। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय गीत का विरोध देशभक्ति पर भी सवाल खड़े करता है। सिंह ने 1937 के कांग्रेस प्रस्ताव का जिक्र किया, जिसमें वंदे मातरम को सिर्फ़ शुरुआती दो छंदों तक ही गाने की बात कही गई थी। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की मांगों को मानते हुए यह फैसला लिया था।

सिंह के अनुसार, ऐसे समझौतों ने राष्ट्रीय एकता को कमजोर किया और आखिरकार ऐसे हालात पैदा किए जिनकी परिणति देश के बंटवारे में हुई। उन्होंने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि वह आज भी कट्टरपंथी तत्वों के प्रति वैसी ही नीति अपना रही है। सिंह ने कहा कि कट्टरपंथी तत्वों के साथ समझौता करना देश के लिए हमेशा घातक साबित हुआ है। उन्होंने कांग्रेस के इस फैसले को भविष्य के लिए गंभीर चेतावनी बताया। कांग्रेस ने 1937 के अपने रख को दोहराया सिंह की यह टिप्पणी कांग्रेस वर्किंग कमिटी द्वारा हाल ही में वंदे मातरम पर पार्टी के 1937 के रख को फिर से दोहराए जाने के बाद आई है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब इस गीत के दर्जे और राष्ट्रानु जन गण मन के साथ इसके स्थान को लेकर फिर से राजनीतिक बहस छिड़ गई है।



दिल्ली पुलिस दफ्तर पर राहुल गांधी का धरना

बोले- साहिल को न्याय मिले, एफआईआर होगी तभी हटेंगे

नईदिल्ली। 21 अगस्त को कांग्रेस नेता और सदस्य पार्लियामेंट स्ट्रीट पुलिस स्टेशन के बाहर जमा हुए। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी वहां धरने पर बैठे थे और उनके साथ साहिल लोचव भी थे, जो 20 जुलाई के विरोध प्रदर्शन के दौरान पैलेट गन के इस्तेमाल से कथित तौर पर घायल हुए थे। कांग्रेस सूत्रों ने पुष्टि की है कि राहुल गांधी तब तक विरोध जारी रखने का इरादा रखते हैं जब तक कि इस घटना के संबंध में एफआईआर दर्ज नहीं हो जाती।

राहुल ने एक्स पर लिखा कि आज साहिल लोचव के साथ, उनके साथ हुई पुलिस बर्बरता के खिलाफ सड़क दर्ज कराने संसद मार्ग के डीसीपी कार्यालय पहुँचा। 20 जुलाई को जंतर-मंतर पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे साहिल पर पुलिस ने पैलेट गन से हमला किया। छर्रों से बुरी तरह घायल साहिल की एक आँख की रौशनी खतरे में है। शांतिपूर्ण प्रदर्शन के खिलाफ ऐसी बर्बरता कोई कानूनी कार्रवाई नहीं, एक गंभीर अपराध है। इस क्रूरता के लिए न गृह मंत्री अमित शाह ने छात्रों को कोई सफाई दी, न प्रधानमंत्री ने उनसे माफ़ी मांगी।

उन्होंने लिखा कि अब जब साहिल न्याय के लिए एफआईआर दर्ज कराना चाहता है तो वो भी नहीं करने दिया जा रहा। इस तरह संविधान और संवैधानिक अधिकारों को कुचला जा रहा है। अमित शाह जी, न्याय से इतना क्यों घबरा रहे हैं ? ये डर दिखा रहा है कि आप अपना अपराध कबूल कर रहे हैं। एफआईआर होगी। न्यायिक जांच होगी। और ऊपर से नीचे तक जो भी इस बर्बरता के दोषी हैं, उन सभी पर कार्रवाई होगी। साहिल और उसके जैसे पीड़ित हर छात्र को न्याय दिलाकर रहेंगे।

इस बीच राहुल गांधी ने मीडिया से बातचीत में कहा कि शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन में शामिल लोगों पर पैलेट गन का इस्तेमाल करना एक गंभीर अपराध है। 20 जुलाई को जंतर-मंतर पर हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान साहिल लोचव को पैलेट गन से लगी कथित चोटों का जिक्र करते हुए, गांधी ने एफआईआर दर्ज करने और इसके लिए जिम्मेदार लोगों की जवाबदेही तय करने की मांग की। उन्होंने कहा कि उनकी आँख में चोट लगी है और उनके दिल के पास छर्रें लगे हैं।

गांधी ने कहा कि दिल्ली पुलिस ने माना है कि अपराध हुआ है और उन्होंने पुलिस से एफआईआर दर्ज करने की अपील की। विरोध प्रदर्शन में मौजूद साहिल की माँ का जिक्र करते हुए गांधी ने कहा, उनकी माँ यहाँ रो रही हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस अधिकारी कह रहे थे कि उन्हें ऊपर से



एफआईआर दर्ज न करने के आदेश मिले हैं। गांधी ने कहा कि जब तक एफआईआर दर्ज नहीं हो जाती, तब तक प्रदर्शनकारी वहाँ नहीं हटेंगे।

राहुल गांधी के धरने पर भाजपा भड़की

कांग्रेस नेता राहुल गांधी के संसद मार्ग थाने में धरने पर बैठने को लेकर ने निशाना साधा है। बीजेपी सांसद रविशंकर प्रसाद ने पलटवार करते हुए कहा कि यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि विपक्ष के नेता राहुल गांधी अराजकता की राजनीति कर रहे हैं। अभी वे बिना किसी अनुमति या पूर्व सूचना के पार्लियामेंट स्ट्रीट पुलिस स्टेशन के बाहर धरने पर बैठे हैं। पुलिस ने उन्हें बताया है कि जिस घटना का



वे जिक्र कर रहे हैं, उस पर पहले ही एफआईआर दर्ज हो चुकी है और उसकी जांच चल रही है। रविशंकर प्रसाद ने कहा, सबसे अहम बात यह है कि जो लोग पीड़ित थे, वे सुप्रीम कोर्ट गए और सुप्रीम कोर्ट ने खुद इस मामले की जांच के लिए एक हाई-पावर्ड कमेटी बनाई। इस कमेटी के प्रमुख सुप्रीम कोर्ट के एक रिटायर्ड जज हैं और इसमें दो अन्य जज, सीबीआई के एक पूर्व डायरेक्टर और एक अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं। तो, गोली चली या नहीं, यह खुद ऐसी हाई-पावर्ड कमेटी के सामने जांच का विषय होगा। फिर इन सबका क्या मतलब है? राहुल गांधी, क्या आपको कानून के शासन का कोई सम्मान नहीं है? क्या आप बस वही कर सकते हैं जो आपका मन करे, कहीं भी जा सकते हैं, धरने पर बैठ सकते हैं और अराजकता फैलाना शुरू कर सकते हैं? भाजपा नेता ने कहा कि हमें शक है और हमारा आरोप है कि कांग्रेस अब राष्ट्रीय वंदे मातरम पर अपने रख के कारण मुश्किल में फंसी हुई है। राहुल गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस अभी जो कर रही है, हम उसकी निंदा करते हैं। 21 अगस्त को कांग्रेस नेता और सदस्य पार्लियामेंट स्ट्रीट पुलिस स्टेशन के बाहर जमा हुए।

स्टेल प्रमुख समाचार

ऑस्ट्रेलिया ने बांग्लादेश के खिलाफ टीम की घोषणा की

मैके (ऑस्ट्रेलिया)। ऑस्ट्रेलिया ने मैके में बांग्लादेश के खिलाफ शनिवार से शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट मैच के लिए अपनी प्लेइंग 11 की घोषणा कर दी है। लाइनअप में जेक वेदरल्ड की जगह मैथ्यू रेनशॉ को शामिल किया गया है, जबकि नाथन लियोन ने अपनी जगह बनाए रखी है। डार्विन टेस्ट में मिली चॉकाने वाली हार के बाद ऑस्ट्रेलिया इस दो मैचों की सीरीज को बराबर करने की कोशिश कर रहा है।

अहम दूसरे टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलिया की 11 खिलाड़ियों वाली टीम में लियोन ने अपनी जगह बनाए रखी है, जबकि कप्तान पैट कर्मिस ने पहले चार तेज गेंदबाजों के अटेक की संभावना का संकेत दिया था जिसमें अनुभवी रिस्नर की जगह स्कॉट बोलेंड को शामिल किया जा सकता था। बाद में पिच का मुआयना करने के बाद कर्मिस ने लियोन को टीम में शामिल करने की पुष्टि की और बोलेंड एक बार फिर रिजर्व विकेटकीपर-बल्लेबाज जोश इग्लिस के साथ टीम से बाहर रह गए।

रेनशॉ दूसरे आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2025-27 मुकाबले में ट्रैविस हेड के साथ ओपनिंग करेंगे। वे साथी बाएं हाथ के बल्लेबाज जेक वेदरल्ड की जगह लेंगे जिन्हें पिछले टेस्ट में 23 और 0 रन बनाने के बाद टीम से बाहर कर दिया गया था। रेनशॉ तीन साल से भी ज्यादा समय बाद अपना पहला टेस्ट मैच खेलने जा रहे हैं। कर्मिस को उम्मीद है कि 30 साल के रेनशॉ वापसी पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। कर्मिस ने कहा, हम बस यही चाहते हैं कि वह अपना बेस्ट खेलें।

दूसरे टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलिया की प्लेइंग 11

मैथ्यू रेनशॉ, ट्रैविस हेड, मार्नस लाबुशेन, स्टीव स्मिथ, कैमरन ग्रीन, एलेक्स कैरी (विकेटकीपर), ब्यू वेबस्टर, पैट कर्मिस (कप्तान), मिशेल स्टार्क, नाथन लियोन, जोश हेजलवुड।

आर्थिक/वित्तीय/विज्ञान/

प्रमुख समाचार

सैंसेक्स 77540 पर बंद, निफ्टी में 20 अंकों की मामूली तेजी

नईदिल्ली। भारतीय शेयर बाजार में कारोबारी हफ्ते के आखिरी दिन सुस्त कारोबार रहा। बेंचमार्क इंडेक्स मामूली बढ़त के साथ बंद हुए। बीएसई सेंसेक्स सपाट 77540 पर बंद हुआ। एनएसई निफ्टी 50 भी 20 अंकों की मामूली तेजी के साथ 24252 पर बंद हुआ। बाजार की सुस्ती में भी मेटल शेयरों में चमक रही। इसके अलावा बैंकिंग और रियल्टी शेयरों में भी जोश दिखा। निफ्टी 50 में एटर्नल, श्रीराम फाइनेंस के शेयरों में 2-2.5 फीसदी तक की मजबूत रही, जो टॉप गेनर रहे। कोटक बैंक, आईटीसी समेत बजाज फाइनेंस के शेयरों में भी 1-1 फीसदी से ज्यादा की बढ़त रही। जबकि टाटा कंजुमर 1.1 फीसदी की गिरावट के साथ 20% लुज़र रहा। ब्राकिंग फर्म पीएल केपिटल के चीफ बिजनेस ऑफिसर (डीलिंग एंड एडवाइजरी) विक्रम कसाट ने कहा कि आज दिनभर बाजार में रेंज में कारोबार हुआ।

सेवा क्षेत्र ने संभाली अर्थव्यवस्था की रफ्तार

नईदिल्ली। भारत में निजी क्षेत्र की कारोबारी गतिविधियों में जुलाई में चार साल के निचले स्तर पर पहुंचने के बाद अगस्त में मामूली सुधार हुआ। शुक्रवार को जारी एचएसबीसी के प्लेश परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) सर्वे के मुताबिक, सेवा क्षेत्र में बेहतर ग्रोथ ने मैन्युफैक्चरिंग की धीमी रफ्तार की भरपाई की। एसएंडपी ग्लोबल द्वारा तैयार किया गया कंपोजिट पीएमआई अगस्त में बढ़कर 54.6 हो गया, जो जुलाई में 54.3 था। जुलाई का स्तर 2022 की शुरुआत के बाद सबसे कम था। सूचकांक लगातार 61वें महीने 50 से ऊपर बना हुआ है। पीएमआई का 50 से ऊपर रहना कारोबारी गतिविधियों में विस्तार और इससे नीचे रहना गिरावट का संकेत देता है। हालांकि, अगस्त का आंकड़ा मार्च 2022 के बाद दूसरा सबसे कमजोर स्तर रहा।

शहरी सहकारी बैंक : अतीत की चुनौतियों से बदलता भविष्य

तमाल बंधोपाध्याय

बाइस साल के अंतराल के बाद भारतीय रिजर्व बैंक नए शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) के लिए ऑन-टैप लाइसेंसिंग का रास्ता खोलने जा रहा है। केंद्रीय बैंक ने इसके लिए मसौदा दिशानिर्देश जारी कर दिए हैं। इसका मतलब यह है कि लाइसेंस किसी निर्धारित समय वाले विंडो की जगह हर समय लगातार दिए जाएंगे। इन मानकों के तहत पात्र विविध राज्य ऋण सहकारी समितियां जिनके पास कम से कम 10 साल के संचालन का रिकॉर्ड हो और न्यूनतम 10,000 करोड़ रुपये की जमा राशि तथा 300 करोड़ रुपये की हैसियत हो, वे यूसीबी में रूपांतरण के लिए आवेदन कर सकती हैं।

यह ऐसे समय पर हो रहा है जब रिजर्व बैंक यूसीबी के लघु वित्त बैंकों (एसएफबी) में स्वेच्छिक बदलाव को प्रोत्साहित कर रहा है। शिवालिक मर्केटाइल कोऑपरेटिव बैंक

लिमिटेड पहला ऐसा यूसीबी है जो सफलतापूर्वक रूपांतरित हुआ। एक अन्य बड़ा यूसीबी नियामकीय बचाव अभियान के माध्यम से एसएफबी क्षेत्र में प्रवेश कर गया। घोटाले से प्रभावित पंजाब एवं महाराष्ट्र को-ऑपरेटिव बैंक (पीएमसी बैंक) का विलय कर उसे यूनिटी स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड में बदल दिया गया। इतिहास पर नजर डालें तो भारत की पहली ऋण सहकारी समिति 1903 में बंगाल में स्थानीय सरकार के समर्थन से बनी थी और इसे ब्रिटिश सरकार के फंडली सोसाइटीज ऐक्ट के तहत पंजीकृत किया गया था। इसके बाद 25 मार्च, 1904 को भारत का सहकारी ऋण समिति अधिनियम लागू किया गया।

1911 तक 5,300 समितियां थीं जिनकी संयुक्त सदस्यता 3 लाख से अधिक थी। 1912 के सहकारी समिति अधिनियम ने एक औपचारिक त्रिस्तरीय संरचना पेश की गांव



स्तर पर प्राथमिक ऋण समितियां, जिला स्तर पर केंद्रीय बैंक और राज्य स्तर पर शीर्ष राज्य बैंक जो अल्पकालिक व मध्यम अवधि का ऋण प्रदान करते थे। रिजर्व बैंक की सहकारी ऋण आंदोलन में औपचारिक भागीदारी 1951 में ऑल इंडिया रूरल क्रेडिट सर्वे कमेटी की नियुक्ति के साथ गंभीरता से शुरू हुई। समिति ने व्यवस्थागत विफलताओं को स्वीकार किया और एकीकृत ग्रामीण ऋण दृष्टिकोण की वकालत की। महत्वपूर्ण बात यह है कि 1919 के मॉन्टेग्यूडचेम्सफोर्ड सुधारों के तहत सहकारिता राज्य का विषय बन गई थी।

ढांचागत बदलाव मार्च 1966 में आया

जब कम से कम एक लाख रुपये की चुकता पूंजी और मुद्रा भंडार वाले सहकारी बैंकों को बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 के अंतर्गत लाया गया। इस अधिनियम में संशोधन कर रिजर्व बैंक की नियामकीय अधिकारिता सभी सहकारी बैंकों तक बढ़ा दी गई जिन्हें तब तक केवल राज्य-विशिष्ट सहकारी कानूनों के तहत ही नियंत्रित किया जाता था। इसने दोहरे नियंत्रण की जटिल व्यवस्था कायम की। रिजर्व बैंक जहां बैंकिंग परिचालन और निगरानी करता था वहीं यूसीबी का प्रशासनिक प्रबंधन राज्य सरकारों के पास था।

एस.एस. मराठे समिति (1991) की अनुशंसाओं के बाद रिजर्व बैंक ने यूसीबी के लाइसेंसिंग मानक शिथिल किए ताकि वित्तीय समावेशन बढ़ाया जा सके। 1993 से पहले नए यूसीबी के लिए एक जिला, एक बैंक का सिद्धांत लागू था। 1993 की नीति के बाद यह

प्रतिबंध समाप्त हो गया और एक जिले में कई यूसीबी को इजाजत मिली बशर्ते कि उनके लिए बाजार मौजूद हो। अन्य बातों के अलावा नीति ने विशेष लक्षित समूहों द्वारा और उनके लिए प्रोत्साहित किए गए यूसीबी के गठन को बढ़ावा दिया। जैसे महिलाओं के सहकारी बैंक, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति द्वारा प्रोत्साहित बैंक, तथा आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में ऋणदाता। इस उदारीकरण ने तीव्र वित्सार को जन्म दिया। मई 1993 से जून 2001 के बीच रिजर्व बैंक ने कम से कम 823 नए लाइसेंस जारी किए और यूसीबी की कुल संख्या 1993 में 1,311 से बढ़कर मार्च 2004 तक लगभग 1,926 हो गई। ये आंकड़े एक अंतर्निहित अस्थिरता को उजागर करते हैं। 2001 में माधवपुरा मर्केटाइल कोऑपरेटिव बैंक का बहुवर्चिंत पतन इस क्षेत्र की कमजोरियों को उजागर कर गया।



श्री विष्णु देव साय, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़



श्री नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

सुशासन तिहार - 2026 राहत, विश्वास और विकास का संगम

सुशासन तिहार 2026 आमजन की समस्याओं के त्वरित निराकरण और शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की दिशा में सार्थक पहल साबित हो रहा है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की मंशा के अनुरूप राज्य के सभी जिलों में आयोजित जनसमस्या निवारण शिविरों के माध्यम से प्रशासन ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंचकर लोगों की समस्याओं को संवेदनशीलता के साथ सुन रहा है तथा उनका मौके पर ही समाधान सुनिश्चित कर रहा है। इससे आम नागरिकों में शासन के प्रति विश्वास और संतोष की भावना मजबूत हुई है। जरूरतमंद परिवारों को न केवल राहत मिल रही है, बल्कि उनके जीवन में नई उम्मीद और आत्मविश्वास का संचार भी हो रहा है।



1 कोरबा : बिजली बिल भुगतान समाधान से घुरविंद दास महंत के चेहरे पर लौटी मुस्कान

कोरबा जिले के ग्राम चुड़या निवासी घुरविंद दास महंत की समस्या का समाधान सुशासन तिहार के अंतर्गत आयोजित जनसमस्या निवारण शिविर में किया गया। श्री महंत मजदूरी कर अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं। उनके परिवार में पत्नी एवं दो बेटियां हैं। आर्थिक परिस्थितियां कमजोर होने तथा लंबे समय तक काम की तलाश में बाहर रहने के कारण वे नियमित रूप से बिजली बिल का भुगतान नहीं कर सके। धीरे-धीरे उनके घर का बिजली बिल बढ़कर लगभग 90 हजार रुपये तक पहुंच गया, जिससे वे लगातार परेशान और चिंतित रहने लगे थे। इस दौरान उन्हें जानकारी मिली कि सुशासन तिहार के माध्यम से शासन एवं प्रशासन स्वयं गांव-गांव पहुंचकर आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान कर रहे हैं। उन्होंने भी आशा और विश्वास के साथ ग्राम चुड़या में आयोजित जनसमस्या निवारण शिविर में पहुंचकर अपनी समस्या संबंधित विभाग के समक्ष रखी। शिविर में विभागीय अधिकारियों द्वारा उन्हें मुख्यमंत्री बिजली बिल भुगतान समाधान योजना की जानकारी दी गई तथा योजना के अंतर्गत लाभ प्रदान करने की प्रक्रिया तत्काल प्रारंभ की गई। विभागीय टीम द्वारा उनके निवास पहुंचकर विद्युत कनेक्शन का परीक्षण किया गया, जिसके पश्चात योजना के तहत उनके लगभग 40 हजार रुपये के बिजली बिल को माफ किया गया। साथ ही शेष राशि को आसान किस्तों में जमा करने की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई। समस्या के समाधान से श्री महंत एवं उनके परिवार को बड़ी राहत मिली।



2 मुंगेली : शिवशक्ति महिला स्व-सहायता समूह को मिला मत्स्य महाजाल

मुंगेली जिले में आयोजित सुशासन तिहार जरूरतमंद हितग्राहियों के लिए राहत और भरोसे का माध्यम बनता जा रहा है। समाधान शिविर के माध्यम से जिले में विभिन्न विभागों द्वारा आमजन की समस्याओं का मौके पर निराकरण किया जा रहा है। इससे ग्रामीणों में शासन के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत हो रहा है तथा योजनाओं का लाभ पात्र हितग्राहियों तक तेजी से पहुंच रहा है। इसी कड़ी में विकासखंड पथरिया के ग्राम पंचायत गंगद्वारी में आयोजित समाधान शिविर में शिवशक्ति महिला स्व-सहायता समूह घुठेली की सचिव श्रीमती मीना राजपूत को मत्स्य महाजाल प्रदान कर तत्काल लाभान्वित किया गया। श्रीमती मीना राजपूत ने शिविर में मछली बीज एवं जाल उपलब्ध कराने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया था। विभाग द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए उन्हें तत्काल मत्स्य महाजाल उपलब्ध कराया गया। साथ ही विभागीय 50 प्रतिशत अंगुलिका संचयन योजना के अंतर्गत जुलाई-अगस्त 2026 में शासकीय मत्स्य बीज प्रक्षेत्र चालान विकासखंड मुंगेली से अनुदान पर मत्स्य बीज प्राप्त करने की जानकारी भी दी गई। मत्स्य महाजाल प्राप्त होने पर श्रीमती मीना राजपूत ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे समूह की आजीविका को नई मजबूती मिलेगी और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि सुशासन तिहार के माध्यम से उनकी समस्या का त्वरित समाधान हुआ, जिससे शासन की संवेदनशीलता और जनहितकारी सोच का अनुभव हुआ।



3 बस्तर : सुशासन शिविर में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच सहित हुआ औषधि वितरण

बस्तर जिले के विकासखंड मुख्यालय दरभा तथा जगदलपुर ब्लॉक के ग्राम हल्बा कचोरा में सुशासन तिहार के तहत शिविर आयोजित किए गए। शिविरों में जनप्रतिनिधियों और बड़ी संख्या में ग्रामीणों की उपस्थिति रही। इस दौरान पात्र हितग्राहियों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित किया गया तथा विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी देकर लोगों को लाभ लेने के लिए प्रेरित किया गया। शिविरों में आयुष्मान कार्ड, वय वंदन कार्ड और राशन कार्ड निर्माण की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई। आम जनता से प्राप्त मांग एवं समस्याओं से जुड़े आवेदनों का मौके पर निराकरण किया गया। दरभा शिविर में प्राप्त 163 आवेदनों में से 101 का समाधान किया गया तथा दो दिव्यांगजनों को व्हील चेयर प्रदान की गई। मत्स्यपालन विभाग ने दो हितग्राहियों को जाल और आइसबाक्स वितरित किए, जबकि 30 स्कूली छात्र-छात्राओं को जाति प्रमाण पत्र दिए गए। महिला स्व सहायता समूहों की 55 दीदियों को 1.59 करोड़ रुपये का बैंक ऋण प्रदान किया गया। महिला एवं बाल विकास विभाग ने पांच बच्चों का अन्नप्राशन और छह गर्भवती महिलाओं की गोदभरवाई कराई। वहीं हल्बा कचोरा शिविर में 63 आवेदनों में से 36 का निराकरण किया गया। पीएम आवास योजना के तहत तीन हितग्राहियों को नए आवास की चाबी सौंपी गई। कृषि विभाग ने 21 किसानों को रागी बीज मिनीकिट तथा मत्स्यपालन विभाग ने चार हितग्राहियों को जाल और आइसबाक्स वितरित किए। साथ ही महिला स्व सहायता समूहों की पांच दीदियों को 10 लाख रुपये का बैंक ऋण प्रदान किया गया।



4 लोरमी (मुंगेली) : समाधान शिविर में अरविंद को मिली बड़ी राहत

लोरमी नगर पालिका के मानस मंच में आयोजित सुशासन तिहार के समाधान शिविर आम लोगों के लिए समस्याओं के समाधान और नई उम्मीद का माध्यम बनते जा रहे हैं। शिविर में आमजन की मांगों और समस्याओं पर त्वरित कार्रवाई करते हुए राहत प्रदान की गई। इसी दौरान श्रमिक अरविंद राजपूत की समस्या का तुरंत समाधान कर उनका श्रम कार्ड बनाकर मौके पर ही प्रदान किया गया। श्रम कार्ड मिलने के बाद उनके चेहरे पर खुशी और संतोष साफ दिखाई दिया। अरविंद ने बताया कि श्रम कार्ड नहीं होने के कारण वे श्रम विभाग की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं ले पा रहे थे और कई प्रयासों के बावजूद प्रक्रिया पूरी नहीं हो सकी थी। समाधान शिविर में आवेदन देने के बाद अधिकारियों ने तत्परता दिखाते हुए आवश्यक प्रक्रिया पूरी की और श्रम कार्ड उपलब्ध कराया। अब उन्हें सामाजिक सुरक्षा, श्रमिक सहायता, स्वास्थ्य लाभ सहित अन्य शासकीय सुविधाओं का लाभ आसानी से मिल सकेगा। अरविंद राजपूत ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और जिला प्रशासन के प्रति आभार जताते हुए कहा कि सुशासन तिहार से जरूरतमंदों को वास्तविक लाभ मिल रहा है। शिविर में पहुंचे नागरिकों ने भी प्रशासन की इस पहल की सराहना की।



5 नारायणपुर : जयदास नाग का पक्के घर का सपना हुआ पूरा

नारायणपुर जिले में सुशासन तिहार 2026 के तहत जनपद पंचायत नारायणपुर के ग्राम कोलियारी में आयोजित समाधान शिविर एक जरूरतमंद परिवार के लिए खुशियों की सौगात बनकर आया। शिविर में हितग्राही जयदास नाग को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत नवनिर्मित पक्के मकान की चाबी सौंपी गई। चाबी मिलते ही उनके चेहरे पर अपने सपनों का घर मिलने की खुशी साफ दिखाई दी। जयदास नाग लंबे समय से परिवार सहित कच्चे और जर्जर मकान में रहने को मजबूर थे। बरसात में छत से पानी टपकने के कारण पूरा परिवार रातभर जागता था। सीमित आर्थिक संसाधनों के चलते पक्का मकान बनाना उनके लिए असंभव जैसा था। उन्होंने कहा कि अब उनका परिवार सुरक्षित और सम्मानजनक माहौल में रह सकेगा तथा बरसात में डर नहीं रहेगा। उन्होंने शासन और जिला प्रशासन के प्रति आभार जताया। प्रशासनिक अधिकारियों ने बताया कि सुशासन तिहार का उद्देश्य जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे पात्र हितग्राहियों तक पहुंचाना है। ग्रामीण परिवारों को पक्का आवास देकर जीवन स्तर सुधारने के लिए प्रशासन प्रतिबद्ध है। इस पहल की ग्रामीणों ने सराहना करते हुए कहा कि इससे शासन और प्रशासन के प्रति उनका विश्वास और मजबूत हुआ है।

सुशासन का संकल्प, जन-जन तक समाधान।

संवाद-48628/1